आपदुद्धारक

श्रीबटुक-भैरव-स्तोत्रम्

महा-काल, काल-भैरव, क्षेत्र-पाल भैरवों के स्तोत्रों सहित
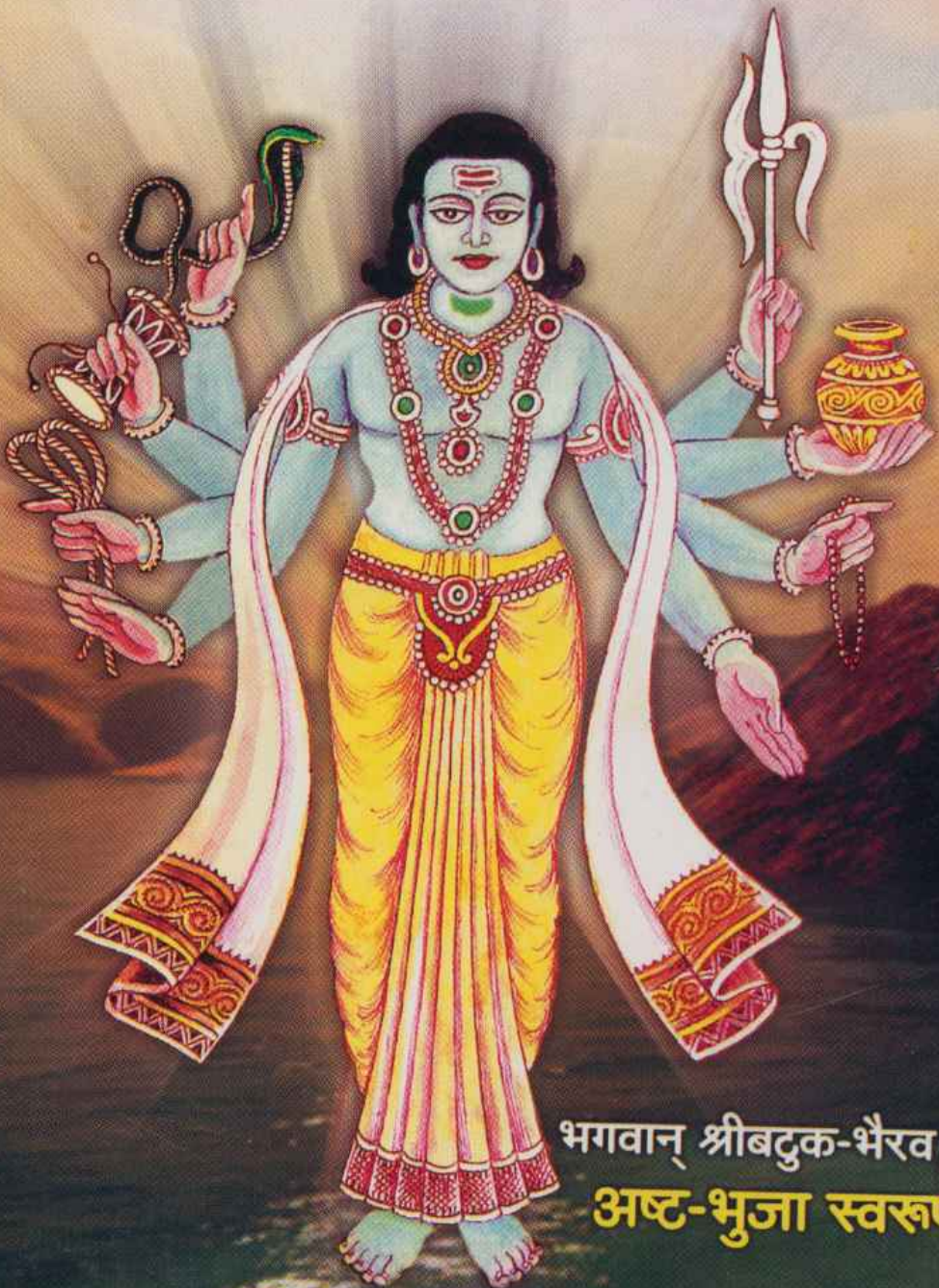
आपदुद्धारक
श्रीबटुक-भैरव-स्तोत्रम्

महा-काल,
काल-भैरव,
क्षेत्र-पाल के स्तोत्रों
एवं
श्रीबटुक-भैरव-स्तोत्र के
विशिष्ट-पाठ-सहित

आदि-सम्पादक
'कुल-भूषण' पण्डित रमादत्त शुक्ल

सम्पादक
ऋतशील शर्मा

प्रकाशक
कल्याण मन्दिर प्रकाशन
अलोपी-देवी मार्ग, प्रयाग-२११००६

अनुक्रम

माहात्म्य-निदर्शन

'श्रीबटुक-भैरव अष्टोत्तर-शत-नाम स्तोत्र' का बहुत बड़ा माहात्म्य है। यह स्तोत्र 'आपदुद्धारक' के नाम से भी प्रसिद्ध है। किसी भी सम्प्रदाय के हिन्दू हों, इसका पाठ बड़ी श्रद्धा के साथ करते हैं। आस्तिक लोगों का विश्वास है कि इस स्तोत्र का पाठ करने से सभी प्रकार की आपदाओं से मुक्ति मिलती है। साथ ही पाठ करनेवाला कल्याण का भाजन होता है।

इस स्तोत्र के कई प्रकार मिलते हैं। प्रस्तुत पुस्तक में दो 'अष्टोत्तर-शत-नाम' प्रकाशित हैं। पहले अष्टोत्तर-शत-नाम स्तोत्र का इस समय लोगों में व्यापक रूप से प्रचार है, अतः हमने उसको यहाँ सबसे पहले दिया है। यह साधकों द्वारा अनुभूत भी है।

पहला स्तोत्र दो भागों में विभक्त है। प्रारम्भ में 'श्रीबटुक-भैरव' के बाइस अक्षर के मन्त्र का माहात्म्य-वर्णन है, परन्तु इस मन्त्र का उपयोग लोग

गुरु-देव से दीक्षा लेकर ही कर सकते हैं। दूसरे अंश में विस्तार के साथ 'अष्टोत्तर-शत-नाम' का स्तोत्र दिया है। इसी स्तोत्र का लोक में प्रचार है। इसी का लोग 'दीप-दान' आदि के प्रयोगों में पाठ करते हैं।

पार्वती और ईश्वर के निम्न-लिखित संवाद से 'श्रीबटुक-भैरव' के इस 'आपदुद्धारक स्तोत्र' का माहात्म्य ज्ञात होता है।

मेरु-पृष्ठ पर सुख-पूर्वक विराजमान जगद्-गुरु देव-देव परमेश्वर शङ्कर से पार्वती ने पूछा—'हे सब धर्मों के जाननेवाले भगवन्! समस्त शास्त्रों और आगमों आदि में मनुष्यों को सब सिद्धियाँ देनेवाला जो आपदुद्धारक मन्त्र है, उसे मैं समस्त प्राणियों के कल्याण के लिए चाहती हूँ। वह मन्त्र राजाओं के लिए विशेष रूप से शान्ति और पुष्टि का साधन है। मुझे प्रसन्न करनेवाले हे देवेश! अङ्ग-न्यास, कर-न्यास और देह-न्यास के सहित उक्त मन्त्र को कहिए।'

इस पर ईश्वर ने कहा—'हे देवि! आपत्ति से उद्धार करनेवाले महा-मन्त्र को सुनो। यह सब दुःखों को शान्त करनेवाला और सभी शत्रुओं का विनाशक है। अपस्मार आदि और विशेष कर ज्वरादि रोगों

का नाश इस मन्त्र-राज के स्मरण मात्र से हो जाता है। यह ग्रहों के सङ्कटों को नाश करनेवाला और सुख-वर्द्धक है।

'हे प्रिये ! तुम्हारे स्नेह से मैं इस सार-पूर्ण मन्त्र को कहता हूँ। यह सभी कामनाओं और राज-सुख का देनेवाला पवित्र आपदुद्धारक मन्त्र है। पहले प्रणव 'ॐ' कहकर, देवी-प्रणव 'ह्रीं' कहे। फिर 'बटुकाय' तब 'आपदुद्धारणाय' कहकर 'कुरु' को दो बार कहे। 'बटुकाय' पुनः कह कर देवी-प्रणव 'ह्रीं' का उच्चारण करे। हे प्रिये ! यह मन्त्रोद्धार हुआ।

'हे देवि ! यह मन्त्रोद्धार तीनों लोकों में बड़ा दुर्लभ है। सब शक्तियों से युक्त यह मन्त्र प्रकट करने योग्य नहीं है। इस मन्त्र के स्मरण मात्र से भूत-प्रेत-पिशाच अत्यन्त भयभीत होकर उसी प्रकार भाग जाते हैं, जिस प्रकार काल, रुद्र आदि से प्रजा दूर भागती है। इसे चाहे स्वयं पढ़े या अन्य से पढ़वाए या पुस्तक की पूजा करे, तो अग्नि, चोर, ग्रह, महा-मारी का कुछ भी भय नहीं रहता। सर्वत्र सुख ही रहता है। पुस्तक की भी पूजा से पूजा करनेवाले को आयु, आरोग्य, ऐश्वर्य, पुत्र-पौत्रादि सम्पदा सदा प्राप्त

रहती है। दरिद्रता, दुर्भाग्य और आपत्ति का भय नहीं रहता।'

पार्वती ने कहा--'हे देव ! आपने कल्प-वृक्ष-स्वरूप भैरव का वर्णन किया है। इनके सहस्र, अयुत और अर्बुद-संख्या में नाम हैं। उन नामों को बताइए, जिनका पाठ कर मनुष्य सब दुःखों से छुटकारा पाकर अपनी सभी कामनाओं और सफलता को प्राप्त करते हैं।'

ईश्वर ने कहा--'हे देवि ! सुनो, मैं आपदुद्धारक महात्मा भैरव के उत्तम १०८ नामों को कहता हूँ, जो सभी पापों को दूर करनेवाले, पुण्य-दायक, सभी आपत्तियों के विनाशक, समस्त कामनाओं को पूर्ण करनेवाले, साधकों को सुखी बनानेवाले, कल्याण-कारी, सभी उपद्रवों के नाशक, आयुष्कर, पुष्टि-कारक, लक्ष्मी-दाता और यशस्वी बनानेवाले हैं।'

उक्त प्रभाव-शाली १०८ नाम ही 'श्रीबटुक-भैरव स्तोत्रं' में समाविष्ट हैं। अतः उसके पाठ-कर्ता के सभी अभीप्ट सिद्ध हो जाते हैं।

※ ※ ※

जीवन में भौतिक कठिनाइयों को दूर करने के लिए और आध्यात्मिक प्रगति की प्राप्ति में—आपदुद्धारक "श्रीबटुक - भैरव अष्टोत्तर-शतनाम-स्तोत्र" का प्रयोग अत्यन्त हितकर होता है।

एक सामान्य व्यक्ति को, इस स्तोत्र का प्रयोग प्रतिदिन निश्चित समय पर कम-से-कम तीन महीने तक करना होता है।

स्तोत्र के प्रयोग की सामान्य विधि इस प्रकार है—

[१] आत्म-शोधन

प्रातःकाल एवं रात्रि में भोजन से पूर्व निश्चित समय पर, शुद्ध होकर, शुद्ध वस्त्र पहनकर, शुद्ध स्थान में पूर्व या उत्तर की ओर मुँह करके बैठे। तब पञ्च-पात्र के जल में निम्न मन्त्र से अंकुश-मुद्रा द्वारा सूर्य-मण्डल से तीर्थों का आवाहन करे—

ॐ गङ्गे च यमुने चैव, गोदावरि ! सरस्वति !
नर्मदे सिन्धु कावेरि ! जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु ॥

फिर पञ्च-पात्र से बाँएँ हाथ की हथेली में जल लेकर निम्न-लिखित मन्त्र पढ़ते हुए उस जल को दाएँ हाथ की मध्यमा-अनामिका अँगुलियों से अपने ऊपर छिड़के—

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा, सर्वावस्थां गतोऽपि वा ।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं, स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः ।।

[२] आचमन

पूर्वोक्त प्रकार से आत्म-शोधन करने के बाद पञ्च-पात्र से पुनः जल लेकर तीन बार आचमन करे—

१ ॐ आत्म-तत्त्वं शोधयामि स्वाहा ।
२ ॐ विद्या-तत्त्वं शोधयामि स्वाहा ।
३ ॐ शिव-तत्त्वं शोधयामि स्वाहा ।

[३] गायत्री का ध्यान

अब हाथ जोड़कर मां गायत्री का ध्यान करे—

ॐ मुक्ता-विद्रुम-हेम-नील-धवलच्छायैर्मुखैस्त्रीक्षणैः,
युक्तामिन्दु-निबद्ध-रत्न-मुकुटां तत्त्वार्थ-वर्णात्मिकाम् ।
गायत्रीं वरदाभयांकुश-कशां शूलं कपालं गुणम्,
शङ्खं चक्रमथारविन्द-युगलं हस्तैर्वहन्तीं भजे ।।

[४] श्री गायत्री-मन्त्र-जप

ध्यान कर चुकने पर श्री गायत्री-मन्त्र का ११ बार जप करे । सम्भव हो, तो पूरी 'सन्ध्योपासना' करे, जिसकी विधि 'श्रीगायत्री-कल्पतरु' नामक पुस्तक के पृष्ठ ४६-५६ में प्रकाशित है ।

[५] श्री गायत्री-मन्त्र-जप का समर्पण

श्रीगायत्री-मन्त्र का जप कर चुकने पर उस जप को हाथ जोड़कर श्री सविता देवता के प्रति समर्पित करे। यथा–

अनेन कृतेन श्रीगायत्री-मन्त्र-जपेन श्रीसविता देवता प्रीयतां नमः।

[६] सप्त-श्लोकी दुर्गा-पाठ

श्री गायत्री-मन्त्र-जप के बाद 'सप्त-श्लोकी चण्डी' का विधि-वत् पाठ करे। पूरी विधि 'सप्त-श्लोकी-चण्डी' नामक पुस्तिका में प्रकाशित है।

[७] अष्टोत्तर-शतनाम स्तोत्र का पाठ

'सप्त-श्लोकी चण्डी' का पाठ कर चुकने के बाद आपदुद्धारण श्री बटुक भैरव अष्टोत्तर–शतनाम-स्तोत्र का पाठ करे। प्रारम्भिक साधकों एवं दीक्षा - प्राप्त साधकों के लिए इसकी विधि इस प्रकार है—

(क) प्रारम्भिक साधकों के लिए पाठ-विधि

प्रारम्भिक साधक को हाथ जोड़कर सर्व-प्रथम भगवान् बटुक भैरव का सात्विक ध्यान (पृष्ठ १३) करना चाहिए। फिर मूल-स्तोत्र (पृष्ठ १६) –'**ॐ भैरवो भूत-नाथश्च**' से फल-श्रुति के (पृष्ठ २१) '**भयं भैरव-कीर्त्तनात्**' ।।५।। तक पाठ करना चाहिए।

(ख) दीक्षा-प्राप्त साधकों के लिए पाठ-विधि

दीक्षा-प्राप्त साधकों को पूर्ण स्तोत्र का पाठ न्यास आदि सहित करना चाहिए। अर्थात् पृष्ठ १३ के **'श्री वृहदारण्यक उवाच'** से लेकर पृष्ठ २२ के अन्तिम शब्द—**'धन-धान्यमवाप्नुयात्'** तक पाठ करना चाहिए।

[८] स्तोत्र-पाठ की एक से अधिक आवृत्ति

स्तोत्र का पाठ यदि एक से अधिक बार करना हो, तो 'फल-श्रुति' का पाठ केवल प्रथम और अन्तिम आवृत्ति में करना चाहिए, शेष आवृत्तियों में नहीं।

इसी प्रकार 'पूर्व-पीठिका', न्यास, पुरश्चरण-प्रयोग-विधि का पाठ केवल प्रथम एवं अन्तिम आवृत्ति में ही करना चाहिए।

[९] बलि-प्रदान

प्रातः-काल अथवा सायं-काल भ० बटुक भैरव के अष्टोत्तर-शतनाम स्तोत्र का पाठ करने के बाद रात्रि में भोजन के समय भगवान् श्रीबटुक-भैरव के प्रति बलि देनी चाहिए। विधि हेतु देखें पृष्ठ २३।

[१०] भगवान् बटुक भैरव के अन्य स्तोत्रों का पाठ

'अधिकस्य अधिकं फलं' के अनुसार, श्रद्धालु साधक भ० बटुक भैरव के अन्य स्तोत्रों का पाठ

सुविधानुसार 'अष्टोत्तर-शतनाम स्तोत्र' के पाठ के बाद कर सकते हैं। ये स्तोत्र आगे (पृष्ठ २६ से ५६) प्रकाशित हैं। अथवा भ० बटुक भैरव की चतुर्थ्यन्त नामावली द्वारा मानसिक नमन-पूजन, बाह्य-पूजन, हवन आदि कर सकते हैं।

[११] पुरश्चरण-संख्या

'आपदुद्धारण श्रीबटुक भैरव अष्टोत्तर शतनाम-स्तोत्र' की ग्यारह हजार आवृत्ति करने से यह स्तोत्र सिद्ध हो जाता है।

आपदुद्धारण

श्री बटुक भैरव

अष्टोत्तर-शतनाम-स्तोत्रम्

पूर्व-पीठिका

।। श्रीवृहदारण्यक उवाच ।।

ॐ मेरु-पृष्ठे सुखासीनं, देव-देवं जगद्-गुरुम् ।
शङ्करं परि - पप्रच्छ, पार्वती परमेश्वरम् ।।

।। श्रीपार्वत्युवाच ।।

भगवन् ! सर्व-धर्मज्ञ ! सर्व - शास्त्रागमादिषु ।
आपदुद्धारणं मन्त्रं, सर्व - सिद्धि - करं नृणाम् ।।
सर्वेषां चैव भूतानां, हितार्थं वाञ्छितं मया ।
विशेषतस्तु राज्ञां वै, शान्ति-पुष्टि-प्रसाधनम् ।।
अङ्गन्यास - करन्यास - देहन्यास - समन्वितम् ।
वक्तुमर्हसि देवेश ! मम हर्ष - विवर्धनम् ।।

।। श्रीशङ्कर उवाच ।।

शृणु देवि ! महा - मन्त्रमापदुद्धार - हेतुकम् ।
सर्व - दुःख - प्रशमनं, सर्व - शत्रु - विनाशनम् ।।
अपस्मारादि - रोगाणां, ज्वरादीनां विशेषतः ।
नाशनं स्मृति - मात्रेण, मन्त्र-राजमिमं प्रिये ! ।।
ग्रह - राज - भयानां च, नाशनं सुख-वर्धनम् ।
स्नेहाद् वक्ष्यामि ते मन्त्रं, सर्व-सारमिमं प्रिये ! ।।

सर्वार्थं - कामदं मन्त्रं, सर्व-भोग-प्रदं नृणाम् ।
आपदुद्धारणं मन्त्रं, प्रवक्ष्यामि विशेषतः ।।
प्रणवं पूर्वमुद्धृत्य, देवी - प्रणवमुद्धरेत् ।
बटुकायेति वै पश्चादापदुद्धारणाय च ।।
कुरु - द्वयं ततः पश्चाद्, बटुकाय पुनर्वदेत् ।
देवी - प्रणवमुद्धृत्य, मन्त्रोद्धारमिमं प्रिये ! ।।
मन्त्रोद्धारमिदं देवि ! त्रैलोक्ये चाति-दुर्लभम् ।
अप्रकाश्यमिदं मन्त्रं, सर्वं - शक्ति - समन्वितम् ।।
स्मरणादेव मन्त्रस्य, भूत - प्रेत - पिशाचकाः ।
विद्रवन्त्यति - भूतानि, काल - रुद्रादिव प्रजाः ।।
पठेद् वा पाठयेद् वाऽपि, पूजयेद् वापि पुस्तकम् ।
नाग्नि-चौर-भयं तस्य, ग्रह - राज - भयं तथा ।।
न च मारी-भयं किञ्चित्, सर्वत्रैव सुखी भवेत् ।
आयुरारोग्यमैश्वर्यं, पुत्र - पौत्रादि - सम्पदः ।।
भवन्ति सततं तस्य, पुस्तकस्यापि पूजनात् ।

।। श्रीपार्वत्युवाच ।।

क एष भैरवो नाम, आपदुद्धारणो मतः ?
त्वया च कथितो देव ! भैरवः कल्प-वित्तमः ।।
तस्य नाम - सहस्राणि, अयुतान्यर्बुदानि च ।
सारमुद्धृत्य तेषां वै, नामाष्ट - शतकं वद ।।

यानि सङ्कीर्तयन् मर्त्यः, सर्व-दुःख-विवर्जितः ।
सर्वान् कामानवाप्नोति, साधकः सिद्धिमेव च ॥

॥ श्रीईश्वर उवाच ॥

शृणु देवि ! प्रवक्ष्यामि, भैरवस्य महात्मनः ।
आपदुद्धारणस्येदं, नामाऽष्ट - शतमुत्तमम् ॥
सर्व - पाप - हरं पुण्यं, सर्वापत्ति - निवारणम् ।
सर्व - कामार्थदं देवि ! साधकानां सुखावहम् ॥
सर्व - मङ्गल - माङ्गल्यं, सर्वोपद्रव - नाशनम् ।
आयुष्करं पुष्टि-करं, श्री-करं च यशस्करम् ॥
आद्यन्ते स्तोत्र - पाठस्य, मूल-मन्त्रं जपेन्नरः ।
अष्टोत्तर-शतं धीमान्, यथा-संख्यमथापि वा ॥
जपान्तेऽप्युत्तर - न्यासाः, कर्तव्याः जप-सिद्धये ।
आयुरारोग्यमैश्वर्यं, सिद्ध्यर्थे विनियोजयेत् ॥

मूल-पाठ

॥ विनियोग ॥

ॐ अस्य श्रीमदापदुद्धारण-श्रीबटुक-भैरव-नामाष्ट-शतकस्य श्रीवृहदारण्यकः ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीबटुक - भैरवो देवता, वं बीजं, ह्रीं शक्तिः, ॐ कीलकं, मम सकलापदुद्धारणे पाठे विनियोगः ।

॥ ऋष्यादि-न्यास ॥

श्रीवृहदारण्यक–ऋषये नमः शिरसि । अनुष्टुप्-छन्दसे नमः मुखे । श्रीबटुक-भैरव-देवतायै नमः हृदि । वं बीजाय नमः गुह्ये । ह्रीं शक्तये नमः पादयोः । ॐ कीलकाय नमः नाभौ । मम सकलापदुद्धारणे पाठे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ।

॥ कर-न्यास ॥

ह्रां वां ईशानाय नमः अंगुष्ठाभ्यां नमः । ह्रीं वीं तत्पुरुषाय नमः तर्जनीभ्यां स्वाहा । ह्रूं वूं अघोराय नमः मध्यमाभ्यां वषट् । ह्रैं वैं वाम-देवाय नमः अनामिकाभ्यां हुं । ह्रौं वौं सद्योजाताय नमः कनिष्ठाभ्यां वौषट् । ह्रः वः पञ्च-वक्त्राय नमः करतल-करपृष्ठाभ्यां फट् ।

• कर-न्यास के बाद निम्न दो न्यास भी लोग करते हैं—

॥ पञ्चाङ्ग-न्यास ॥

ह्रों वों ईशानाय नमः शिरसि । ह्रें वें तत्पुरुषाय नमः मुखे । ह्रुं वुं अघोराय नमः हृदि । ह्रिं विं वाम - देवाय नमः गुह्ये । ह्रं वं सद्योजाताय नमः चरणयोः ।

॥ पञ्च-वक्त्र-न्यास ॥

ह्रों वों ईशानाय नमः ऊर्ध्व-मुखे । ह्रें वें तत्पुरुषाय नमः पूर्व-मुखे । ह्रं वुं अघोराय नमः दक्षिण-

मुखे । ह्लिं विं वाम-देवाय नमः पश्चिम-मुखे । ह्लं वं सद्योजाताय नमः उत्तर-मुखे ।

॥ षडङ्ग-न्यास ॥

ह्लां वां ईशानाय नमः हृदयाय नमः । ह्लीं वीं तत्पुरुषाय नमः शिरसे स्वाहा । ह्लूं वूं अघोराय नमः शिखायै वषट् । ह्लैं वैं वाम-देवाय नमः कवचाय हुं । ह्लौं वौं सद्योजाताय नमः नेत्र-त्रयाय वौषट् । ह्लः वः पञ्च-वक्त्राय नमः अस्त्राय फट् ।

॥ सात्त्विक ध्यान ॥

वन्दे बालं स्फटिक-सदृशं, कुन्तलोल्लासि-वक्त्रम् ।
दिव्याकल्पैर्नव-मणि-मयैः, किङ्किणी-नूपुराढ्यैः ॥
दीप्ताकारं विशद - वदनं, सुप्रसन्नं त्रिनेत्रम् ।
हस्ताब्जाभ्यां बटुकमनिशं, शूल-दण्डौ दधानम् ॥

॥ राजस ध्यान ॥

उद्यद्-भास्कर-सन्निभं त्रि-नयनं रक्ताङ्गराग-स्रजम्,
स्मेरास्यं वरदं कपालमभयं शूलं दधानं करैः ।
नील-ग्रीवमुदार-भूषण-युतं शीतांशु-खण्डोज्ज्वलम्,
बन्धूकारुण - वाससं भय-हरं देवं सदा भावये ॥

॥ तामस ध्यान ॥

ध्यायेन्नीलाद्रि-कान्तं शशि-शकल-धरं मुण्ड-मालं महेशं,
दिग्-वस्त्रं पिङ्ग-केशं डमरुमथ सृणिं खड्ग-पाशाभयानि ।

नागं घण्टां कपालं कर-सरसिरुहैर्बिभ्रतं भीम-दंष्ट्रम्,
दिव्याकल्पं त्रि-नेत्रं मणिमय-विलसत्किंकिणी-नूपुराढ्यं।।

॥ मानस-पूजा ॥

(१) लं पृथिव्यात्मकं गन्धं श्रीमदापदुद्धारण-बटुक-भैरव-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि……

अधो-मुख-कनिष्ठांगुष्ठ से ।

(२) हं आकाशात्मकं पुष्पं श्रीमदापदुद्धारण-बटुक-भैरव-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि……

अधो-मुख-तर्जनी-अंगुष्ठ से ।

(३) यं वाय्वात्मकं धूपं श्रीमदापदुद्धारण-बटुक-भैरव-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि……

ऊर्ध्व-मुख-तर्जनी-अंगुष्ठ से ।

(४) रं वन्ह्यात्मकं दीपं श्रीमदापदुद्धारण-बटुक-भैरव-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि……

ऊर्ध्व-मुख-मध्यमा-अंगुष्ठ से ।

(५) वं अमृतात्मकं नैवेद्यं श्रीमदापदुद्धारण-बटुक-भैरव-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि…

ऊर्ध्व-मुख-अनामांगुष्ठ से ।

(६) शं शक्त्यात्मकं ताम्बूलं श्रीमदापदुद्धारण-बटुक-भैरव-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि……

ऊर्ध्व-मुख-सर्वांगुलियों से ।

मूल-मन्त्र-जप (१०८ बार)

ॐ ह्रीं बटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु बटुकाय ह्रीं···(द्वाविंशत्यक्षर)

मूल स्तोत्र

ॐ भैरवो भूत-नाथश्च, भूतात्मा भूत-भावनः ।
क्षेत्रज्ञः क्षेत्र-पालश्च, क्षेत्रदः क्षत्रियो विराट् ।।१।।
श्मशान-वासी मांसाशी, खर्पराशी स्मरान्त-कृत् ।
रक्तपः पानपः सिद्धः, सिद्धिदः सिद्धि-सेवितः ।।२।।
कङ्कालः काल-शमनः, कला-काष्ठा-तनुः कविः ।
त्रि-नेत्रो बहु-नेत्रश्च, तथा पिङ्गल-लोचनः ।।३।।
शूल-पाणिः खड्ग-पाणिः, कङ्काली धूम्र-लोचनः ।
अभीरुर्भैरवी - नाथो, भूतपो योगिनी - पतिः ।।४।।
धनदोऽधन - हारी च, धन-वान् प्रतिभाग-वान् ।
नाग-हारो नाग-केशो, व्योम-केशः कपाल-भृत् ।।५।।
कालः कपाल-माली च, कमनीयः कला-निधिः ।
त्रि-नेत्रो ज्वलन्नेत्रस्त्रि-शिखी च त्रि-लोक-भृत् ।।६।।
त्रिवृत्त-तनयो डिम्भः, शान्तः शान्त-जन-प्रियः ।
बटुको बटु - वेषश्च, खट्वाङ्ग-वर-धारकः ।।७।।
भूताध्यक्षः पशु - पतिर्भिक्षुकः परिचारकः ।
धूर्तो दिगम्बरः शौरिर्हरिणः पाण्डु - लोचनः ।।८।।

प्रशान्तः शान्तिदः शुद्धः, शङ्कर-प्रिय-बान्धवः ।
अष्ट - मूर्तिर्निधीशश्च, ज्ञान-चक्षुस्तपो - मयः ॥६॥
अष्टाधारः षडाधारः, सर्प-युक्तः शिखी-सखः ।
भूधरो भूधराधीशो, भूपतिर्भूधरात्मजः ॥१०॥
कपाल - धारी मुण्डी च, नाग-यज्ञोपवीत-वान् ।
जृम्भणो मोहनः स्तम्भी, मारणः क्षोभणस्तथा ॥११॥
शुद्ध-नीलाञ्जन-प्रख्य-देहः मुण्ड-विभूषणः ।
बलि-भुग् बलि-भुङ्-नाथो, बालो बाल-पराक्रमः ॥१२॥
सर्वापत्-तारणो दुर्गो, दुष्ट - भूत - निषेवितः ।
कामी कला-निधिः कान्तः, कामिनी-वश-कृद्वशी ॥१३॥
जगद्-रक्षा - करोऽनन्तो, माया-मन्त्रौषधी-मयः ।
सर्वं - सिद्धि - प्रदो वैद्यः, प्रभ-विष्णुरितीव हि ॥१४॥

॥ फल-श्रुति ॥

अष्टोत्तर - शतं नाम्नां, भैरवस्य महात्मनः ।
मया ते कथितं देवि ! रहस्यं सर्वं - कामदम् ॥१॥
य इदं पठते स्तोत्रं, नामाष्ट - शतमुत्तमम् ।
न तस्य दुरितं किञ्चिन्न च भूत-भयं तथा ॥२॥
न शत्रुभ्यो भयं किञ्चित्, प्राप्नुयान्मानवः क्वचिद् ।
पातकेभ्यो भयं नैव, पठेत् स्तोत्रमतः सुधीः ॥३॥
मारी - भये राज - भये, तथा चौराग्निजे भये ।
औत्पातिके भये चैव, तथा दुःस्वप्नजे भये ॥४॥

बन्धने च महा - घोरे, पठेत् स्तोत्रमनन्य-धीः ।
सर्वं प्रशममायाति, भयं भैरव - कीर्त्तनात् ।।५।।

[पुरश्चरण एवं प्रयोग-विधि]

एकादश - सहस्रं तु, पुरश्चरणमुच्यते ।
यस्त्रि-सन्ध्यं पठेत् स्तोत्रं, सम्वत्सरमतन्द्रितः ।।६।।
स सिद्धि प्राप्नुयादिष्टां, दुर्लभामपि मानवः ।
षण्मासाद् भूमि-कामस्तु, पठित्वा लभते महीम् ।।७।।
निज - शत्रु - विनाशार्थं, जपेन्मासाष्टकं यदि ।
रात्रौ बार - त्रयं चैव, नाशयेच्चैव शात्रवान् ।।८।।
जपेन्मास - त्रयं मर्त्यो, राजानं वशमानयेत् ।
धनार्थी चैव सुतार्थी, दारार्थी यश्च मानवः ।।९।।
जपेन्मास - त्रयं देवि ! वारमेकं महा - निशि ।
धन-पुत्रास्तथा दारान्, प्राप्नुयान्नात्र संशयः ।।१०।।
रोगी रोगात् प्रमुच्येत, बद्धो मुच्येत बन्धनात् ।
भीतो भयात् प्रमुच्येत, देवि ! सत्यं न संशयः ।।११।।
यं यं कामयते कामं, पठेत् स्तोत्रमनुत्तमम् ।
तं तं काममवाप्नोति, सिद्धिवान्नात्र संशयः ।।१२।।
निगडैश्चापि बद्धो यः, कारा-गृह - निपातितः ।
शृङ्खला-बन्धनं प्राप्तः, पठेच्चेदं दिवा-निशम् ।।१३।।

अप्रकाश्यं परं गुह्यं, न देयं यस्य कस्यचित् ।
सु-कुलीनाय शान्ताय, ऋजवे दम्भ-वर्जिते ।।१४।।
दद्यात् स्तोत्रमिदं पुण्यं, सर्वं - काम-फल-प्रदम् ।
य इदं पठते नित्यं, धन - धान्यमवाप्नुयात् ।।१५।।
।। श्रीविश्व-सारे रुद्र-यामले उमा-महेश्वर-संवादे
श्रीमदापदुद्धारण-श्रीबटुक-भैरव-स्तोत्रं शुभमस्तु ।।
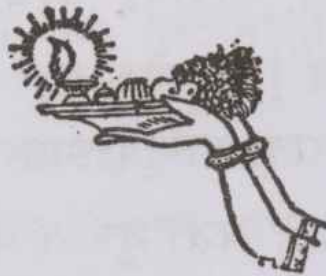
श्रीबटुक-बलि

स्तोत्र-पाठ के अन्त में एक पात्र में अपनी सामर्थ्य के अनुसार श्रीबटुक-भैरव के निमित्त बलि-सामग्री सजाकर अपने सामने किसी आधार-पात्र पर स्थापित करे। पहले आधार-पात्र में रक्त चन्दन से अनार या बेल की कलम से त्रिकोण-वृत्त-चतुरस्र का एक मण्डल बना कर उसका निम्न मन्त्र से गन्धाक्षत द्वारा पूजन करे—

ॐ श्रीमदापदुद्धारण-बटुक-भैरवाय बलि-मण्डलाय नमः।

फिर आवाहनादि मुद्राओं को दिखाते हुए निम्न मन्त्र से श्रीबटुक-भैरव का वहाँ आवाहनादि करे—

ॐ श्रीमदापदुद्धारण-बटुक-भैरव-नाथ! इहागच्छ इह तिष्ठ। इह सन्निधेहि। इह सन्निरुद्धस्व। इह सम्मुखी भव। मम पूजां गृहाण।

तब निम्न षडङ्ग मन्त्रों से गन्धाक्षत छोड़ कर सकलीकरण करे—

ह्रां वां ईशानाय नमः हृदयाय नमः। ह्रीं वीं तत्पुरुषाय नमः शिरसे स्वाहा। ह्रूं वूं अघोराय नमः शिखायै वषट्। ह्रैं वैं वाम-देवाय नमः कवचाय हुं। ह्रौं वौं सद्योजाताय नमः नेत्र-त्रयाय वौषट्। ह्रः वः पञ्च-वक्त्राय नमः अस्त्राय फट्।

इसके बाद बलि-सामग्री - युक्त पात्र को उक्त मण्डल के ऊपर रखकर गन्धाक्षत से निम्न मन्त्र द्वारा उसका पूजन करे—

ॐ श्रीमदापदुद्धारण-बटुक-भैरव-नाथ ! बलि-द्रव्याय नमः ।

फिर घृत या तैल से सिक्त रुई की एक धूप-बत्ती जलाकर निम्न मन्त्र पढ़ते हुए बलि-पात्र में रख दे—

ॐ श्रीमदापदुद्धारण-बटुक-भैरव-नाथ! दीपं दर्शयामि ।

अब बलि-पात्र को बाएँ हाथ के अँगूठे से स्पर्श कर दाएँ हाथ में एक चम्मच में कारण-विन्दु लेकर बलि-प्रदान का निम्न मन्त्र पढ़े——

ॐ ॐ ॐ एह्येहि देवी-पुत्र ! श्रीमदापदुद्धारण-बटुक-भैरव-नाथ ! सर्व-विघ्नान् नाशय नाशय, इमं स्तोत्र-पाठ-पूजनं सफलं कुरु कुरु सर्वोपचार-सहितं बलिमिमं गृह्ण गृह्ण स्वाहा । एष बलिर्वं बटुक-भैरवाय नमः ।

यह कहकर दीपक की ज्योति में कारण-विन्दु को अर्पित कर दे । अन्त में वहीं पात्र के सामने निम्न मन्त्र पढ़ते हुए पुष्पाञ्जलि छोड़े——

ॐ बलि-दानेन सन्तुष्टो, बटुकः सर्व-सिद्धिदः ।
रक्षां करोतु मे नित्यं, भूत - वेताल - सेवितः ।।

चतुर्थ्यन्त श्रीबटुक-नामावली

यहाँ श्रीबटुक-भैरव के १०८ नामों के 'चतुर्थ्यन्त'-रूप दिये जा रहे हैं। इनमें से प्रत्येक के आदि में—'ॐ ह्रीं' जोड़कर १०८ 'पूजा-मन्त्र' बना लें। इन मन्त्रों से नित्य मानसिक-रूप से नमन, पूजन करने का विशेष फल है।

सम्भव हो, तो श्रीबटुक-भैरव के 'यन्त्र-राज' में इन्हीं मन्त्रों के अन्त में 'पूजयामि नमः' जोड़ कर गन्धाक्षत, रक्त-पुष्पों को अर्पित कर बाह्य-पूजन करे।

इन्हीं मन्त्रों में 'नमः' के स्थान पर 'स्वाहा' जोड़ कर 'होम' भी कर सकते हैं, जिसका और भी अधिक फल होता है।

इस प्रकार इन 'नाम-मन्त्रों' से मानसिक नमन-पूजन, बाह्य-पूजन और हवन के १०८ मन्त्र निम्न प्रकार प्रयोग में ला सकते हैं—

मानस नमन-पूजन हेतु

'ॐ ह्रीं भैरवाय नमः, ॐ ह्रीं भूतनाथाय नमः', इत्यादि।

यन्त्र-राज में बाह्य-पूजन हेतु

ॐ ह्रीं भैरवाय नमः श्रीभैरवं पूजयामि नमः, ॐ ह्रीं भूतनाथाय नमः श्रीभूतनाथं पूजयामि नमः' इत्यादि।

प्रतिष्ठित अग्नि में होम करने हेतु

'ॐ ह्रीं भैरवाय स्वाहा, ॐ ह्रीं भूतनाथाय स्वाहा' इत्यादि ।

१ ॐ ह्रीं भैरवाय नमः	२१ कला-काष्ठा-तनवे नमः
२ भूत-नाथाय नमः	२२ कवये नमः
३ भूतात्मने नमः	२३ त्रि-नेत्राय नमः
४ भूत-भावनाय नमः	२४ बहु-नेत्राय नमः
५ क्षेत्रज्ञाय नमः	२५ पिङ्गल-लोचनाय नमः
६ क्षेत्र-पालाय नमः	२६ शूल-पाणये नमः
७ क्षेत्रदाय नमः	२७ खड्ग-पाणये नमः
८ क्षत्रियाय नमः	२८ कङ्कालिने नमः
९ विराजे नमः	२९ धूम्र-लोचनाय नमः
१० श्मशान-वासिने नमः	३० अभीरवे नमः
११ मांसाशिने नमः	३१ भैरवी-नाथाय नमः
१२ खर्पराशिने नमः	३२ भूतपाय नमः
१३ स्मरान्त-कृते नमः	३३ योगिनी-पतये नमः
१४ रक्तपाय नमः	३४ धनदाय नमः
१५ पानपाय नमः	३५ अधन-हारिणे नमः
१६ सिद्धाय नमः	३६ धनवते नमः
१७ सिद्धिदाय नमः	३७ प्रतिभागवते नमः
१८ सिद्धि-सेविताय नमः	३८ नाग-हाराय नमः
१९ कङ्कालाय नमः	३९ नाग-केशाय नमः
२० काल-शमनाय नमः	४० व्योम-केशाय नमः

४१ कपाल-भृते नमः
४२ कालाय नमः
४३ कपाल-मालिने नमः
४४ कमनीयाय नमः
४५ कला-निधये नमः
४६ त्रि-नेत्राय नमः
४७ ज्वलन्नेत्राय नमः
४८ त्रिशिखिने नमः
४९ त्रिलोक-भृते नमः
५० त्रिवृत्त-तनयाय नमः
५१ डिम्भाय नमः
५२ शान्ताय नमः
५३ शान्त-जन-प्रियाय नमः
५४ बटुकाय नमः
५५ बटु-वेषाय नमः
५६ खट्वाङ्ग-वर-धारकाय नमः
५७ भूताध्यक्षाय नमः
५८ पशुपतये नमः
५९ भिक्षुकाय नमः
६० परिचारकाय नमः

६१ धूर्ताय नमः
६२ दिगम्बराय नमः
६३ शौरये नमः
६४ हरिणाय नमः
६५ पाण्डु-लोचनाय नमः
६६ प्रशान्ताय नमः
६७ शान्तिदाय नमः
६८ शुद्धाय नमः
६९ शङ्कर-प्रिय-बान्धवाय नमः
७० अष्ट-मूर्तये नमः
७१ निधीशाय नमः
७२ ज्ञान-चक्षुषे नमः
७३ तपो-मयाय नमः
७४ अष्टाधाराय नमः
७५ षडाधाराय नमः
७६ सर्प-युक्ताय नमः
७७ शिखी-सखाय नमः
७८ भूधराय नमः
७९ भूधराधीशाय नमः
८० भू-पतये नमः

८१ भूधरात्मजाय नम. ९६ सर्वापत्तारणाय नमः
८२ कपाल-धारिणे नमः ९७ दुर्गाय नमः
८३ मुण्डिने नमः ९८ दुष्ट-भूत-निषेविताय नमः
८४ नाग-यज्ञोपवीत-वते नमः
८५ जृम्भणाय नमः ९९ कामिने नमः
८६ मोहनाय नमः १०० कला-निधये नमः
८७ स्तम्भिने नम. १०१ कान्ताय नमः
८८ मारणाय नमः १०२ कामिनी-वशकृद्वशिने नमः
८९ क्षोभणाय नमः १०३ जगद्-रक्षा-कराय नमः
९० शुद्ध-नीलांजन-प्रख्य-देहाय नमः
९१ मुण्ड-विभूषणाय नमः १०४ अनन्ताय नमः
९२ बलि-भुजे नमः १०५ माया-मन्त्रौषधी-मयाय नमः
९३ बलिभुङ्-नाथाय नमः १०६ सर्व-सिद्धि-प्रदाय नमः
९४ बालाय नमः १०७ वैद्याय नमः
९५ बाल-पराक्रमाय नमः १०८ प्रभविष्णवे नमः

शाप-विमोचन

एवं

शापोद्धार

श्रीबटुक-भैरव के मन्त्र और स्तोत्र के सम्बन्ध में 'शाप-विमोचन' एवं शापोद्धार के लिए एक 'मन्त्र' एवं एक 'बटुक-स्तव' है, जो इस प्रकार हैं—

मन्त्र—ॐ ह्रीं बटुक ! शापं विमोचय विमोचय ह्रीं क्लीं ।

उक्त मन्त्र का कम-से-कम दस बार मूल-मन्त्र के जप के पूर्व जप कर निम्न स्तव का एक बार पाठ कर लें—

बटुक-स्तवः

ॐ वृन्दारक - प्रकर - वन्दित - पाद - पद्मम्,
चञ्चत् - प्रभा - पटल - निर्जित - नील - पद्मम् ।
सर्वार्थ - साधकमगाध - दया - समुद्रम्,
वन्दे विभुं बटुक - नाथमनाथ - बन्धुम् ।। १ ।।
मुण्ड-माला-धरं शान्तं, कुण्डल-प्रभयाऽन्वितम् ।
भुजङ्ग-मेखलं दिव्यं, बटुकाख्यं नमाम्यहम् ।।२।।
चतुर्बाहुं कला - मूर्तिं, युगान्त - दहनोपमम् ।
सर्वार्थ - साधकं देवं, भैरवं प्रणमाम्यहम् ।।३।।

ज्वलदग्नि-प्रतीकाशं, खट्वाङ्ग-वर - धारकम् ।
श्व-गणैः सर्वतो व्याप्तं, भैरवं प्रणमाम्यहम् ।।४।।
ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च, मरीच्याद्या महर्षयः ।
बटुकं प्रणमन्ते तं, सदा सम्पन्न - मानसम् ।।५।।
पञ्च-वक्त्रं कृपा-सिन्धुं, नानाऽऽभरण-भूषितम् ।
धर्मार्थ-काम-मोक्षाणां, दातारं प्रणमाम्यहम् ।।६।।
विद्यावन्तं दयावन्तं, शङ्कर - प्रिय - बान्धवम् ।
उत्पत्ति-स्थिति - संहारं, भैरवं प्रणमाम्यहम् ।।७।।

।। फल-श्रुति ।।

य इदं पठते नित्यं, बटुक - स्तव - पूर्वकम् ।
सर्वा-बाधा-विनिर्मुक्तः, स सर्वेप्सित-भाग् भवेत् ।।८।।

सविधि बटुकोत्कीलन-मन्त्र

विनियोग– ॐ अस्य श्रीबटुक-भैरवोत्कीलन-मन्त्र-स्योग्र-भैरवो ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीभैरवो देवता, वं बीजं, ह्रीं शक्तिः, क्लीं कीलकं, मम सर्वाभीष्ट-सिद्ध्यर्थे बटुक-भैरवोत्कीलन-मन्त्र-जपे विनियोगः ।

ऋष्यादि-न्यास— उग्रभैरव-ऋषये नमः शिरसि । अनुष्टुप्-छन्दसे नमः मुखे । श्रीभैरव - देवतायै नमः हृदि । वं बीजाय नमः गुह्ये । ह्रीं शक्तये नमः पादयोः । क्लीं कीलकाय नमः नाभौ । मम सर्वाभीष्ट-सिद्ध्यर्थे बटुक-भैरवोत्कीलन-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ।

कर-न्यास—ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः । ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः । क्लीं मध्यमाभ्यां नमः । ऐं अनामिकाभ्यां नमः । ह्रूं कनिष्ठिकाभ्यां नमः । भ्रां कर-तल-कर-पृष्ठाभ्यां नमः ।

षडङ्ग-न्यास– बटुकाय हृदयाय नमः । उमा-पुत्राय शिरसे स्वाहा । एकादश-रुद्रावताराय शिखायै वषट् । वीरभद्रावताराय कवचाय हुम् । सूर्य-कोटि-प्रकाशाय नेत्र-त्रयाय वौषट् । भैरवाय अस्त्राय फट् ।

अङ्ग-न्यास—रं दक्ष-हस्ते । ब्राँ वाम-हस्ते । व्यं दक्ष-कर्णे । रं वाम-कर्णे । ब्राँ दक्ष-नेत्रे । व्यं वाम-नेत्रे । रं दक्षांसे । ब्राँ वामांसे । व्यं सर्वाङ्गे व्यापकम् ।

मन्त्र—(१) ॐ ह्रीं क्लीं ऐं ह्लुं भ्रों भ्रों भ्रों श्रं श्रं श्रं श्रं श्रं
ह्रीं श्रीं बटुकाय कुरु कुरु स्वाहा ।

(२) ॐ ह्रीं क्लीं ऐं ह्लुं ॐ श्रं श्रीं बटुकाय ।

किसी एक मन्त्र को २१ बार या दोनों को ७-७ बार जप कर नीचे लिखे स्तोत्र का पाठ करे—

बटुकोत्कीलन-पञ्चरत्न-स्तोत्रं

भैरवो बटुको देव आपदुद्धारणस्तथा ।
देव - देवो महा - रुद्रो भैरवः प्राण - वल्लभः ॥१॥
क्रोध उन्मत्त - मातङ्ग - संहार - भैरवस्तथा ।
कालः कपाल - माली च भीषणो भैरवस्तथा ॥२॥
कात्यायनी महा - गौरी हैमवत्यंश - कामिनी ।
योगि-भैरव-माता च भैरवी प्राण - वल्लभा ॥३॥
काल-भैरव - भार्या च काम-मोक्ष - पुरन्दरी ।
वीर-भैरव - रोमाङ्गी शत्रु-सङ्कट - नाशिनी ॥४॥
योगिनी योग - माया च सर्व-भैरव - मोहिनी ।
सर्व - वीर्य-महा-तेजाः सर्वत्र शुभ - दायिनी ॥५॥

॥ फल-श्रुति ॥

पञ्च-रत्नं पठेद् देवि ! सर्वत्र विजयी भवेत् ।
पुत्र-पौत्र - धनं धान्यं, सर्व - रोग-निवारणम् ॥

दूसरा दुर्लभ

अष्टोत्तर-शतनाम-स्तोत्रम्

॥ विनियोग ॥

ॐ अस्य श्रीबटुक-भैरव-स्तोत्र-मन्त्रस्य कालाग्नि-रुद्र ऋषिः। अनुष्टुप् छन्दः। आपदुद्धारक-बटुक-भैरवो देवता। ह्रीं बीजं। भैरवी-वल्लभः शक्तिः। नील-वर्णो दण्ड-पाणिः कीलकं। समस्त-शत्रु-दमने समस्ता-पन्निवारणे सर्वाभीष्ट-प्रदाने च विनियोगः।

॥ ऋष्यादि-न्यास ॥

ॐ कालाग्नि--ऋषये नमः शिरसि। अनुष्टुप्-छन्दसे नमः मुखे। आपदुद्धारक-श्रीबटुक-भैरव-देवतायै नमः हृदये। ह्रीं बीजाय नमः गुह्ये। भैरवी-वल्लभ-शक्तये नमः पादयोः। नील-वर्णो दण्ड-पाणिः कीलकाय नमः नाभौ। समस्त-शत्रु-दमने समस्तापन्निवारणे सर्वा-भीष्ट-प्रदाने च विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

॥ मूल-मन्त्र ॥

ॐ ह्रीं वं बटुकाय क्षौं क्षौं आपदुद्धारणाय कुरु कुरु बटुकाय स्वाहा।

॥ ध्यान ॥

नील-जीमूत-सङ्काशो जटिलो रक्त-लोचनः।
दंष्ट्रा कराल-वदनः सर्प-यज्ञोपवीत-वान्॥

दंष्ट्राऽऽयुधालंकृतश्च कपाल-स्रग्-विभूषितः ।
हस्त-न्यस्त-करो टीका-भस्म-भूषित-विग्रहः ।।
नाग-राज-कटी-सूत्रो बाल-मूर्तिर्दिगम्बरः ।
मञ्जु-सिञ्जान-मंजरी-पाद-कम्पित-भूतलः ।।
भूत-प्रेत - पिशाचैश्च सर्वतः परिवारितः ।
योगिनी-चक्र-मध्यस्थो मातृ-मण्डल-वेष्टितः ।।
अट्टहास-स्फुरद्-वक्त्रो भृकुटी-भीषणाननः ।
भक्त-संरक्षणार्थं हि दिक्षु भ्रमण - तत्परः ।।

।। स्तोत्र ।।

ॐ ह्रीं बटुको वरदः शूरो भैरवः काल-भैरवः ।
भैरवी-वल्लभो भव्यो दण्ड-पाणिर्दया-निधिः ।।१
वेताल-वाहनो रौद्रो रुद्र-भृकुटि-सम्भवः ।
कपाल-लोचनः कान्तः कामिनी-वश-कृद्-वशी ।।२
आपदुद्धारणो धीरो हरिणाङ्क-शिरोमणिः ।
दंष्ट्रा-करालो दष्टोष्ठौ धृष्टो दुष्ट-निबर्हणः ।।३
सर्प - हारः सर्प-शिरः सर्प-कुण्डल-मण्डितः ।
कपाली करुणा-पूर्णः कपालैक - शिरोमणिः ।।४
श्मशान-वासी मांसाशी मधु-मत्तोऽट्टहास-वान् ।
वाग्मी वाम-व्रतो वामो वाम-देव-प्रियङ्करः ।।५
वनेचरो रात्रि-चरो वसुदो वायु-वेग-वान् ।
योगी योग-व्रत-धरो योगिनी-वल्लभो युवा ।।६

वीर-भद्रो विश्वनाथो विजेता वीर-वन्दितः ।
भूताध्यक्षो भूति-धरो भूत-भीति-निवारणः ।।७
कलङ्क-हीनः कङ्काली क्रूरः कुक्कुर-वाहनः ।
गाढो गहन - गम्भीरो गण-नाथ-सहोदरः ।।८
देवी-पुत्रो दिव्य-मूर्तिर्दीप्ति-मान् दिवा-लोचनः ।
महासेन-प्रिय-करो मान्यो माधव - मातुलः ।।९
भद्र-काली-पतिर्भद्रो भद्रदो भद्र - वाहनः ।
पशूपहार-रसिकः पाशी पशु - पतिः पतिः ।।१०
चण्डः प्रचण्ड-चण्डेशश्चण्डी-हृदय - नन्दनः ।
दक्षो दक्षाध्वर-हरो दिग्वासा दीर्घ-लोचनः ।।११
निरातङ्को निर्विकल्पः कल्पः कल्पान्त-भैरवः ।
मद-ताण्डव-कृन्मत्तो महादेव-प्रियो महान् ।।१२
खट्वाङ्ग-पाणिः खातीतः खर-शूलः खरान्त-कृत् ।
ब्रह्माण्ड-भेदनो ब्रह्म-ज्ञानी ब्राह्मण-पालकः ।।१३
दिक्-चरो भू-चरो भूष्णुः खेचरः खेलन-प्रियः,
सर्व-दुष्ट-प्रहर्त्ता च सर्व - रोग - निषूदनः ।
सर्व-काम-प्रदः शर्वः सर्व-पाप-निकृन्तनः ।।१४

।। फल-श्रुति ।।

इत्थमष्टोत्तर-शतं नाम्ना सर्व - समृद्धिदम् ।
आपदुद्धार - जनकं बटुकस्य प्रकीर्तितम् ।।

एतच्च श्रृणुयान्नित्यं लिखेद् वा स्थापयेद् गृहे ।
धारयेद् वा गले बाहौ तस्य सर्वा समृद्धयः ।।
न तस्य दुरितं किञ्चिन्न चौर-नृपजं भयम् ।
न चापस्मृति-रोगेभ्यो डाकिनीभ्यो भयं नहि ।।

न कूष्माण्ड-ग्रहादिभ्यो नापमृत्योर्न च ज्वरात् ।
मासमेकं त्रि-सन्ध्यं तु शुचिर्भूत्वा पठेन्नरः ।।
सर्व-दारिद्रय-निर्मुक्तो निधिं पश्यति भूतले ।
मास-द्वयमधीयानः पादुका-सिद्धिमान् भवेत् ।।

अञ्जनं गुटिका खड्गं धातु-वाद-रसायनम् ।
सारस्वतं च वेताल-वाहनं बिल - साधनम् ।।
कार्य-सिद्धि महा-सिद्धि मन्त्रं चैव समीहितम् ।
वर्ष-मात्रमधीनः प्राप्नुयात् साधकोत्तमः ।।

एतत् ते कथितं देवि ! गुह्याद् गुह्यतरं परम् ।
कलि-कल्मष-नाशनं वशीकरणं चाम्बिके ! ।।

१

प्रातः-स्मरणम्

प्रातः स्मरामि वटुकं सुकुमार-मूर्तिम्,
श्री-स्फाटिकाभ-सदृशं कुटिलालकाढ्यम् ।
वक्त्रं दधानमणिमादि-गुणैर्हि युक्तम्,
हस्त - द्वयं मणि - मयैः पद - भूषणैश्च ।।१
प्रातर्नमामि बटुकं तरुणं त्रिनेत्रम्,
कामास्पदं वर - कपाल - त्रिशूल-दण्डान् ।
भक्तार्ति-नाश-करणे दधतं करेषु,
तं कौस्तुभाभरण-भूषित - दिव्य - देहम् ।।२
प्रातःकाले सदाऽहं भगण-परिधरं भाल-देशे महेशम्,
नागं पाशं कपालं डमरुमथ सृणि खड्ग-घण्टाऽभयानि,
दिग्वस्त्रं पिङ्ग-केशं त्रि-नयन-सहितं मुण्डं-मालं करेषु ।
यो धत्ते भीम-दष्ट्रं मम विजय-करं भैरवं तं नमामि ।।३
देव-देव ! कृपा-सिन्धो ! शत्रु-नाशिन् ! महाऽव्यय !
संसारासक्त - चित्तं मां मोक्ष-मार्गे निवेशय ।।४
एतच्छ्लोक - चतुष्कं वै भैरवस्य तु यः पठेत् ।
सर्व - बाधा - विनिर्मुक्तो जायते निर्भयः पुमान् ।।५

२

श्रीबटुक-भैरव कवच-राज-स्तोत्रम्

॥ विनियोग ॥

ॐ अस्य श्रीबटुक-भैरव-कवच-राजस्य भैरवो ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीबटुक-भैरवो देवता, मम सर्वार्थ-साधने विनियोगः ।

॥ ऋष्यादि-न्यास ॥

ॐ भैरव-ऋषये नमः शिरसि । अनुष्टुप् छन्दसे नमः मुखे । श्रीबटुक-भैरव-देवतायै नमः हृदये । मम सर्वार्थ-साधने विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ।

ॐ पातु शिरसि नित्यं, पातु ह्रीं कण्ठ-देशके ।
बटुकं पातु हृदये, आपदुद्धारणाय च ॥१
कुरु-द्वयं मे लिङ्गस्य, आधारे बटुकाय च ।
सर्वदा पातु ह्रीं बीजं, बाह्वोर्युगलमेव च ॥२
षडङ्ग - सहितो देवो, नित्यं रक्षतु भैरवः ।
ह्रीं बटुकाय सततं, सर्वाङ्गे मम सर्वदा ॥३
ह्रीं काल पादयोः पातु, पातु वीरासनं हृदि ।
महा-कालः शिरं पातु, कण्ठ-देशे तु भैरवः ॥४
दण्ड - पाणिर्गुह्य - मूले, भैरवी - सहितस्ततः ।
ललिता-भैरवः पातु, अष्टाभिः शक्तिभिः सह ॥५

विश्व-नाथः सदा पातु, सर्वाङ्गे मम सर्वदा ।
अन्न-पूर्णा सदा पातु, अंसं रक्षतु चण्डिका ।।६
असिताङ्गः शिरः पातु, ललाटं पातु भैरवः ।
चण्ड - भैरवः तु वक्त्रे, कण्ठे श्रीक्रोध-भैरवः ।।७
मूलाधारं भीषणश्च, बाहु - युग्मं च भैरवः ।
हंस - बीजं पातु हृदि, सोऽहं रक्षतु प्राणयोः ।।८
प्राणापान - समानं च, उदानं व्यानमेव च ।
रक्षन्तु द्वार - मूले तु, दश - दिक्षु समन्ततः ।।९
प्रणवः पातु सर्वाङ्गं, लज्जा - बीजं महा - भये ।
श्रीब्रह्म - कवचं शुभंः, भैरवस्य प्रकीर्तितम् ।।१०

।। श्रीबटुक-भैरवस्य कवच-राज-स्तोत्रं सम्पूर्णम् ।।

3

श्रीबटुक-भैरव हृदय-स्तोत्रम्

पूर्व-पीठिका

कैलाश-शिखरासीनं, देव - देवं जगद् - गुरुम् ।
देवी पप्रच्छ सर्वज्ञं, शङ्करं वरदं शिवम् ।।१

॥ श्रीदेव्युवाच ॥

देव - देव ! परेशान ! भक्ताभीष्ट - प्रदायक !
प्रब्रूहि मे महा-भाग ! गोप्यं यद्यपि न प्रभो ! ।।२
बटुकस्यैव हृदयं, साधकानां हिताय च ।

॥ श्रीशिव उवाच ॥

शृणु देवि ! प्रवक्ष्यामि, हृदयं बटुकस्य च ।।३
गुह्याद्-गुह्य-तरं गुह्यं, तच्छृणुष्व तु मध्यमे !
हृदयास्यास्य देवेशि ! वृहदारण्यको ऋषिः ।।४
छन्दोऽनुष्टुप् समाख्यातो, देवता बटुकः स्मृतः ।
प्रयोगाभीष्ट-सिद्ध्यर्थं, विनियोगः प्रकीर्तितः ।।५

सविधि हृदय-स्तोत्रम्

विनियोग—ॐ अस्य श्रीबटुक-भैरव-स्तोत्रस्य श्री वृहदारण्यक ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीबटुक-भैरवः देवता, अभीष्ट-सिद्ध्यर्थं पाठे विनियोगः ।

ऋष्यादि-न्यास——श्री वृहदारण्यक - ऋषये नमः शिरसि। अनुष्टुप्-छन्दसे नमः मुखे। श्रीबटुक-भैरव-देवतायै नमः हृदये। अभीष्ट-सिद्धयर्थं पाठे विनि-योगाय नमः सर्वांगे।

ॐ प्रणवेशः शिरः पातु, ललाटे प्रमथाधिपः।
कपोलौ काम - वपुषो, भ्रू-भागे भैरवेश्वरः ॥१
नेत्रयोर्वह्नि - नयनो, नासिकायामघा - पहः।
ऊर्ध्वोष्ठे दीर्घ - नयनो, ह्यधरोष्ठे भयाशनः ॥२
चिबुके भाल - नयनो, गण्डयोश्चन्द्र - शेखरः।
मुखान्तरे महा-कालो, भीमाक्षो मुख - मण्डले ॥३
ग्रीवायां वीर-भद्रोऽव्याद्, घण्टिकायां महोदरः।
नील-कण्ठो गण्ड-देशे, जिह्वायां फणि-भूषणः ॥४
दशने वज्र - दशनो, तालुके ह्यमृतेश्वरः।
दोर्दण्डे वज्र-दण्डो मे, स्कन्धयोः स्कन्द-वल्लभः ॥५
कूर्परे कञ्ज - नयनो, फणौ फेत्कारिणी-पतिः।
अङ्गुलीषु महा - भीमो, नखेषु अघहाऽवतु ॥६
कक्षे व्याघ्रासनो पातु, कट्यां मातङ्ग-चर्मणी।
कुक्षौ कामेश्वरः पातु, वस्ति-देशे स्मरान्तकः ॥७
शूल - पाणिर्लिङ्ग-देशे, गुह्ये गुह्येश्वरोऽवतु।
जङ्घायां वज्र - दमनो, जघने जृम्भकेश्वरः ॥८

पादौ ज्ञान - प्रदः पातु, धनदश्चाङ्गुलीषु च ।
दिग्-वासो रोम-कूपेषु, सन्धि-देशे सदा-शिवः ।।९
पूर्वाशां काम-पीठस्थः, उड्डीशस्थोऽग्नि-कोणके ।
याम्यां जालन्धरस्थो मे, नैर्ऋत्यां कोटि-पीठगः ।।१०
वारुण्यां वज्र-पीठस्थो, वायव्यां कुल - पीठगः ।
उदीच्यां वाण-पीठस्थः, ऐशान्यामिन्दु-पीठगः ।।११
ऊर्ध्वं बीजेन्द्र-पीठस्थः, खेटस्थो भूतलोऽवतु ।
रुरुः शयानेऽवतु मां, चण्डो वादे सदाऽवतु ।।१२
गमने तीव्र - नयनः, आसीने भूत - वल्लभः ।
युद्ध - काले महा-भीमो, भय-काले भवान्तकः ।।१३
रक्ष रक्ष परेशान ! भीम - दंष्ट्र ! भयापह !
महा-काल ! महा-काल ! रक्ष मां काल-सङ्कटात् ।।१४

।। फल-श्रुतिः ।।

इतीदं हृदयं दिव्यं, सर्व - पाप - प्रणाशनम् ।
सर्व-सम्पत्-प्रदं भद्रे ! सर्व-सिद्धि-फल-प्रदम् ।।

।। श्रीबटुक-भैरव-हृदय-स्तोत्रं सम्पूर्णम् ।।

४

बटुक-भैरव-रहस्यम्

॥ श्रीदेव्युवाच ॥

भगवन् देव - देवेश ! रहस्यं बटुकाय मे ।
ब्रूहि येन वशी-कुर्यात्, साधको भैरवं शिवम् ॥१

॥ श्रीबटुक उवाच ॥

शृणु देवि ! परं गोप्यं, कथयामि सु-शोभने !
रहस्यं सिद्धिदं साक्षाद्, बटुकस्य महात्मनः ॥२
सर्वे बटुक-देवस्य, साधने ये निरूपिताः ।
उपाया निष्फला एव, विधानं वीर-साधनम् ॥३
यो वीर-साधनं हित्वा, उपायं चान्यमाश्रयेत् ।
न स सिद्धिमवाप्नोति, नरो वर्ष-शतैरपि ॥४
दक्षिणे भूचरः पातु, वामे पातु सदा-शिवः ।
केशान् पातु विशालाक्षो, मूर्धानं मे मरुत्-प्रियः ॥५
मस्तकं पातु भृग्वीशो, नेत्रं पातु महा-मनाः ।
कपोलौ पातु वीरेशो, गण्डौ गण्डारि-मर्दनः ॥६
उत्तरौष्ठं विरूपाक्षो, ह्यधरे योगिनी-प्रियः ।
दन्ते रक्षसि विध्वंसी, चिबुके पातु काल-धृक् ॥७
कण्ठे रक्षतु मे देवो, नील-कण्ठो जगद्-गुरुः ।
दक्ष-स्कन्धे गिरीन्द्रेशो, वाम-स्कन्धे च सुन्दरः ॥८

भुजे च दक्षिणे सर्व - मन्त्र - नाथः सदाऽवतु ।
वामे भुजे सर्व - भीमो, हृदयं पातु पाण्डुरः ।।९
दक्ष - स्तने पशु - पतिर्वामे पातु महेश्वरः ।
उदरे सर्व - कल्याण - कारकोऽवतु मां सदा ।।१०
नाभौ काम- प्रविध्वंसी, जङ्घे पातु महा-मनाः ।
जानुनी पातु यामित्रो, गुल्फौ गौरी-पतिः सदा ।।११
पाद - पृष्ठौ ज्ञान - निधिस्तथा पादांगुलीर्हरः ।
पादाधः पातु सततं, व्योमकेशो जगत् - प्रियः ।।१२

।। मन्त्र-रक्षा ।।

ॐ ह्लां ह्लीं ह्लूं ह्लः पूर्वे भैरवाय नमः ।
ॐ ह्लि ह्लुं ह्लों आग्नेये रुरु-भैरवाय नमः ।
ॐ ह्लीं श्रीं दक्षिणे चण्ड-भैरवाय नमः ।
ॐ ल्ह्रीं ग्ल्हूं नग नग नैर्ऋत्ये क्रोध-भैरवाय नमः ।
ॐ प्रूं श्रूं प्रूं सः सः पश्चिमे उन्मत्त-भैरवाय नमः ।
ॐ ब्रां ब्रां ब्रां वायव्ये कपाल-भैरवाय नमः ।
ॐ भ्रां भ्रां भ्रां उत्तरे भीषण-भैरवाय नमः ।
ॐ प्रूं प्रूं त्रं फट् ईशाने संहार-भैरवाय नमः ।

।। रुद्रयामले तन्त्रे बटुक-भैरव-रहस्यं सम्पूर्णम् ।।

५

श्रीबटुक-भैरव माला-मन्त्रम्

विनियोग—ॐ अस्य श्रीबटुक-भैरव-माला-मन्त्रस्य वृहदारण्यक ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीबटुक-भैरवो देवता, ह्रीं बीजं, बटुकाय, शक्तिः, आपदुद्धारणाय कीलकं, ममाभीष्ट-सिद्धयर्थे जपे विनियोगः ।

[न्यासाः ध्यानं च पूर्व-वत्]

माला-मन्त्र

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं ॐ ह्रीं बटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु बटुकाय ह्रीं द्रां द्रीं क्लीं क्लूं सः ह्रौं जूं सः ह्रां ह्रीं ह्रूं भ्रां भ्रीं भ्रूं डमल-वरयूं ह्रौं ह्रौं महा-कालाय महा-भैरवाय मां रक्ष रक्ष, मम पुत्रान् रक्ष रक्ष, मम भ्रातॄन् रक्ष रक्ष, मम शिष्यान् रक्ष रक्ष, साधकान् रक्ष रक्ष, मम परिवारान् रक्ष रक्ष, ममोपरि दुष्ट-दृष्टि दुष्ट-बुद्धि दुष्ट-प्रयोगान् कारकान् दुष्ट-प्रयोगान् कुर्वंति कारयति करिष्यति तां हन-हन, उच्चाटय - उच्चाटय,, स्तम्भय-स्तम्भय, मारय-मारय, मथ-मथ, धुन-धुन, छेदय-छेदय, छिन्धि-छिन्धि, हन-हन, फ्रें-फ्रें-फ्रें, खें-खें-खें, ह्रीं-ह्रीं-ह्रीं, ह्रूं-ह्रूं-ह्रूं, दुं-दुं-दुं, दुष्टं दारय-दारय, दारिद्रं हन-हन, पापं मथ-मथ, आरोग्यं कुरु-कुरु, पर-बलानि क्षोभय-क्षोभय, क्षौं-क्षौं-क्षौं, ह्रीं बटुकाय, केलि-रुद्राय नमः ।।

६–श्रीबटुक शान्ति-स्तोत्रम्

यस्यार्चनेन विधिना किमपीह लोके,
कर्म प्रसिद्धमिति नाम फलं प्रसूते ।
तं सततं सकल-साधक-वाञ्छिताप्ति—
चिन्तामणिं सुर-गणाधिपतिं नमामि ।।१
रक्ताम्बरं ज्वलन-पिङ्ग-जटा-कलापम्,
ज्वालावली-कुटिल-चन्द्र-धरं त्रिनेत्रम् ।
बालार्क-चाम्र-फल-काञ्चन-तुल्य-वर्णम्,
देवी - सुतं बटुक - नाथमहं भजामि ।।२
हरतु कुल-गणेशो विघ्न-सर्पानशेषान्,
नयतु कुल-सपर्या-पूर्णतां साधकानाम् ।
पिवतु बटुक-नाथः शोणितं निन्दकानाम्,
दिशतु सकल-कामान् साधकानां गणेशः ।।३
सतत-वितत-तेजाश्चक्र-भासा विनम्र–
ग्रसन-समुदितो वै विश्व-सन्दोह-नाभिः ।
प्रलय-नयन-नाभिः किन्तु चात्मोद्भवावि–
र्भवतु भुवन-गर्भो भैरवो नः पुनातु ।।४
या काचिद् योगिनी रौद्रा, सौम्या घोर-तरा परा ।
गृह्णातु बलि - पूजां सा, मम व्याधिं व्यपोहतु ।।५
नन्दन्तु साधका सर्वे, विनश्यन्तु प्रदूषकाः ।
अवस्था शाम्भवी मेऽस्तु, प्रसन्नोऽस्तु गुरुः सदा ।।६

७

श्रीमहाकाल-भैरव-कवचम्

॥ श्रीदेव्युवाच ॥

देव-देव, महा-बाहो ! भक्तानां सुख-वर्धन !
केन सिद्धि ददात्याशु, काली त्रैलोक्य-मोहन ! ॥१
तन्मे वद दयाऽऽधार ! साधकाभीष्ट - सिद्धये ।
कृपां कुरु जगन्नाथ ! वद वेद - विदां वर ! ॥२

॥ श्रीभैरव उवाच ॥

गोपनीयं प्रयत्नेन, तत्त्वात् तत्त्वं परात्परम् ।
एष सिद्धि-करः सम्यक्, किमथो कथयाम्यहम् ॥३
महा-कालमहं वन्दे, सर्व - सिद्धि - प्रदायकम् ।
देव - दानव - गन्धर्व - किन्नर-परि - सेवितम् ॥४
कवचं तत्त्व - देवस्य, पठनाद् घोर - दर्शने ।
सत्यं भवति सान्निध्यं, कवच - स्तवनान्तरात् ॥५
सिद्धि ददाति सा तुष्टा, कृत्वा कवचमुत्तमम् ।
साम्राज्यत्वं प्रियं दत्वा, पुत्र-वत् परि-पालयेत् ॥६
कवचस्य ऋषिर्देवी, कालिका दक्षिणा तथा,
विराट्-छन्दः सु-विज्ञेयं, महा-कालस्तु देवता ।
कालिका साधने चैव, विनियोगः प्रकीर्त्तितः ॥७
ॐ श्मशानस्थो महा-रुद्रो, महा-कालो दिगम्बरः ।
कपाल - कर्तृका वामे, शूलं खट्वाङ्ग दक्षिणे ॥८

भुजङ्ग-भूषिते देवि ! भस्मास्थि-मणि-मण्डितः ।
ज्वलत्-पावक-मध्यस्थो, भस्म-शय्या-व्यवस्थितः ॥६
विपरीत - रतां तत्र, कालिकां हृदयोपरि ।
पेयं खाद्यं च चोष्यं च, तौ कृत्वा तु परस्परम् ।
एवं भक्त्या यजेद् देवं, सर्व-सिद्धिः प्रजायते ॥१०
प्रणवं पूर्वमुच्चार्य, महा - कालाय तत्पदम् ।
नमः पातु महा - मन्त्रः, सर्व-शास्त्रार्थ - पारगः ॥११
अष्टाक्षरो महा - मन्त्रः, सर्वाशा - परिपूरकः ।
सर्व - पाप - क्षयं याति, ग्रहणे भक्त - वत्सले ॥१२
कूर्च - द्वन्द्वं महा - काल ! प्रसीदेति पद - द्वयम् ।
लज्जा-युग्मं वह्नि-जाया, स तु राजेश्वरो महान् ॥१३
मन्त्र-ग्रहण - मात्रेण, भवेत् सत्यं महा - कविः ।
गद्य-पद्य - मयी वाणी, गङ्गा - निर्झरिता तथा ॥१४
तस्य नाम तु देवेशि ! देवा गायन्ति भावुकाः ।
शक्ति - बीज-द्वयं दत्वा, कूर्चं स्यात् तदनन्तरम् ॥१५
महा-काल-पदं दत्वा, माया - बीज - युगं तथा ।
कूर्चमेकं समुद्धृत्य, महा - मन्त्रो दशाक्षरः ॥१६
राज - स्थाने दुर्गमे च, पातु मां सर्वतो मुदा ।
वेदादि - बीजमादाय, भग - मान् तदनन्तरम् ॥१७
महा-कालाय सम्प्रोच्य, कूर्चं दत्वा च ठ-द्वयम् ।
ह्रींकार - पूर्वमुद्धृत्य, वेदादिस्तदनन्तरम् ॥१८

महा - कालस्यान्त-भागे, स्वाहान्त-मनुमुत्तमम् ।
धनं पुत्रं सदा पातु, बन्धु - दारा - निकेतनम् ।।१६
पिङ्गलाक्षो मञ्जु - युद्धे, युद्धे नित्यं जय-प्रदः ।
सम्भाव्यः सर्व-दुष्टघ्नः, पातु स्व-स्थान-वल्लभः ।।२०
इति ते कथितं तुभ्यं, देवानामपि दुर्लभम् ।
अनेन पठनाद् देवि ! विघ्न - नाशो यथा भवेत् ।।२१
सम्पूजकः शुचि-स्नातः, भक्ति - युक्तः समाहितः ।
सर्व-व्याधि - विनिर्मुक्तः, वैरि - मध्ये विशेषतः ।।२२
महा-भीमः सदा पातु, सर्वं - स्थान - वल्लभम् ।
काली-पार्श्व-स्थितो देवः, सर्वदा पातु मे मुखे ।।२३

।। फल-श्रुति ।।

पठनात् कालिका - देवी, पठेत् कवचमुत्तमम् ।
श्रृणुयाद् वा प्रयत्नेन, सदाऽऽनन्द-मयो भवेत् ।।१
श्रद्धयाऽश्रद्धया वापि, पठनात् कवचस्य यत् ।
सर्वं - सिद्धिमवाप्नोति, यद् - यन्मनसि वर्तते ।।२
बिल्व - मूले पठेद् यस्तु, पठनाद् कवचस्य यत् ।
त्रि-सन्ध्यं पठनाद् देवि ! भवेन्नित्यं महा-कविः ।।३
कुमारीं पूजयित्वा तु, यः पठेद् भाव - तत्परः ।
न किञ्चिद् दुर्लभं तस्य, दिवि वा भुवि मोदते ।।४

दुर्भिक्षे राज - पीड़ायां, ग्रामे वा वैरि - मध्यके ।
यत्र यत्र भयं प्राप्तः, सर्वत्र प्रपठेन्नरः ।।५
तत्र तत्राभयं तस्य, भवत्येव न संशयः ।
वाम-पार्श्वे समानीय, शोभितां वर - कामिनीम् ।।६
श्रद्धयाऽश्रद्धया वापि, पठनात् कवचस्य तु ।
प्रयत्नतः पठेद् यस्तु, तस्य सिद्धिः करे स्थिता ।।७
इदं कवचमज्ञात्वा, कालं यो भजते नरः,
नैव सिद्धिर्भवेत् तस्य, विघ्नस्तस्य पदे पदे ।
आदौ वर्म पठित्वा तु, तस्य सिद्धिर्भविष्यति ।।८

।। रुद्र-यामले महा-तन्त्रे महा-काल-भैरव-कवचं सम्पूर्णम् ।।

श्री महाकाल-भैरव-स्तोत्रम्

ॐ महा-काल महा-काय, महा-काल जगत्-पते !
महा-काल महा-योगिन्, महा-काल ! नमोऽस्तु ते ।।१
महा-काल महा-देव, महा-काल महा-प्रभो !
महा-काल महा-रुद्र, महा-काल ! नमोऽस्तु ते ।।२
महा-काल महा-ज्ञान, महा-काल तमोऽपहन् !
महा-काल महा-काल, महा-काल ! नमोऽस्तु ते ।।३
भवाय च नमस्तुभ्यं, शर्वाय च नमो नमः ।
रुद्राय च नमस्तुभ्यं, पशूनां पतये नमः ।।४
उग्राय च नमस्तुभ्यं, महा-देवाय वै नमः ।
भीमाय च नमस्तुभ्यं, ईशानाय नमो नमः ।।५
ईशानाय नमस्तुभ्यं, तत्पुरुषाय वै नमः ।।६
सद्योजात ! नमस्तुभ्यं, शुक्ल-वर्ण ! नमो नमः ।
अधः कालाग्नि-रुद्राय, रुद्र-रूपाय वै नमः ।।७
स्थित्युत्पत्ति-लयानां च, हेतु-रूपाय वै नमः ।
परमेश्वर - रूपस्त्वं, नील एवं नमोऽस्तु ते ।।८
पवनाय नमस्तुभ्यं, हुताशन ! नमोऽस्तु ते ।
सोम-रूप ! नमस्तुभ्यं, सूर्य-रूप ! नमोऽस्तु ते ।।९

यजमान ! नमस्तुभ्यं, आकाशाय नमो नमः ।
सर्व-रूप ! नमस्तुभ्यं, विश्व-रूप ! नमोऽस्तु ते ।।१
ब्रह्म-रूप ! नमस्तुभ्यं, विष्णु-रूप ! नमोऽस्तु ते ।
रुद्र-रूप ! नमस्तुभ्यं, महा-काल ! नमोऽस्तु ते ।।११
स्थावराय नमस्तुभ्यं, जङ्गमाय नमो नमः ।
नमः स्थावर-जङ्गमाभ्यां, शाश्वताय नमो नमः ।।१२
हुं हुङ्कार ! नमस्तुभ्यं, निष्कलाय नमो नमः ।
अनाद्यन्त महा - काल, निर्गुणाय नमो नमः ।।१३
प्रसीद मे नमो नित्यं, मेघ-वर्ण ! नमोऽस्तु ते ।
प्रसीद मे महेशान, दिग्-वासाय नमो नमः ।।१४
ॐ ह्रीं माया-स्वरूपाय, सच्चिदानन्द - तेजसे ।
स्वाहा सम्पूर्ण - मन्त्राय, सोऽहं हंसाय ते नमः ।।१५

।। फल-श्रुति ।।

इत्येवं देव - देवस्य, महा - कालस्य भैरवि !
कीर्तितं पूजनं सम्यक्, साधकानां सुखावहम् ।।१६

।। श्रीमहा-काल-भैरव-स्तोत्रं सम्पूर्णम् ।।

९
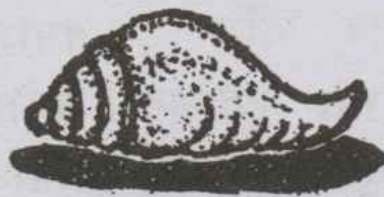
श्रीकाल-भैरवाष्टक-स्तोत्रम्

देव-राज - सेव्यमान - पावनांघ्रि - पङ्कजम्,
व्याल-यज्ञ - सूत्रमिन्दु-शेखरं कृपा - करम् ।
नारदादि-योगि - वृन्द - वन्दितं दिगम्बरम्,
काशिका - पुराधि-नाथं काल - भैरवं भजे ।।१
भानु-कोटि-भास्वरं भवाब्धि - तारकं परम्,
नील-कण्ठमीप्सितार्थ-दायकं त्रि - लोचनम् ।
काल - कालमम्बुजाक्षमक्ष - शूलमक्षरम्,
काशिका - पुराधि-नाथं काल - भैरवं भजे ।।२
शूल-टङ्क-पाश - दण्ड - पाणिमादि-कारणम्,
श्याम - कायमादि - देवमक्षयं निरामयम् ।
भीम-विक्रम-प्रभुं विचित्र - ताण्डव - प्रियम्,
काशिका - पुराधि-नाथं काल - भैरवं भजे ।।३
भुक्ति-मुक्ति-दायकं प्रशस्त - चारु - विग्रहम्,
नितान्त-भक्त-वत्सलं समस्त-लोक-विग्रहम् ।
निक्वणन्-मनोज्ञ-हेम-किङ्किणी-लसत्-कटिम्,
काशिका - पुराधि-नाथं काल - भैरवं भजे ।।४
धर्म-सेतु-पालकं कु - धर्म - मार्ग - नाशनम्,
कर्म-पाश - मोचकं सु-धर्म - दायकं विभुम् ।

स्वर्ण-वर्ण-केश-पाश - शोभिताङ्ग - मण्डलम्,
काशिका - पुराधि-नाथं काल - भैरवं भजे ।।५
रत्न -पादुका - प्रभाऽभिराम-पाद - युग्मकम्,
नित्यमद्वितीयमिष्ट - दैवतं निरञ्जनम् ।
मृत्यु - दर्प - नाशकं कराल-दंष्ट्र-भीषणम्,
काशिका - पुराधि-नाथं काल - भैरवं भजे ।।६
अट्टहास-भिन्न-पद्मजाण्ड - कोश - सन्ततिम्,
दृष्टि-पात - नष्ट-पाप-जालमुग्र - शासनम् ।
अष्ट-सिद्धि - दायकं कपाल - मालिका-धरम्,
काशिका - पुराधि-नाथं काल - भैरवं भजे ।।७
भूत-सङ्घ - नायकं विशाल-कीर्ति - दायकम्,
काशि-वास-लोक-पुण्य-पाप - शोधकं विभुम् ।
नीति-मार्ग - कोविदं पुरातनं जगत् - पतिम्,
काशिका - पुराधि-नाथं काल - भैरवं भजे ।।८

।। फल-श्रुति ।।

काल - भैरवाष्टकं पठन्ति ये मनोहरम्,
ज्ञान-मुक्ति-साधनं सु-पुष्टि-पुण्य-वर्द्धनम् ।
शोक-मोह-दैन्य-लोभ-कोप-ताप-नाशनम्,
ते प्रयान्ति काल-भैरवांघ्रि-सन्निधिं ध्रुवम् ।।

।। श्रीमद्-शङ्कराचार्य-विरचितं काल-भैरवाष्टक-स्तोत्रं ।।

•

१०

श्रीक्षेत्रपाल-भैरवाष्टक--स्तोत्रम्

यं यं यं यक्ष-रूपं दश-दिशि-वदनं भूमि-कम्पाय-मानम् ।
सं सं सं संहार-मूर्ति शिर-मुकुट-जटा-जूट-चन्द्र-बिम्बम् ।
दं दं दं दीर्घ-कायं विकृत-नख-मुखं ऊर्ध्व-रोम-करालं ।
पं पं पं पाप-नाशं प्रणमत-सततं भैरवं क्षेत्र-पालम् ॥१
रं रं रं रक्त-वर्णं कट-कटि-तनुं तीक्ष्ण-दंष्ट्रा-करालम् ।
घं घं घं घोष-घोषं घघ-घघ-घटितं घर्घरा-घोर-नादं ।
कं कं कं काल-रूपं धिग-धिग-धृगितं ज्वालित-काम-देहं ।
दं दं दं दिव्य-देहं प्रणमत-सततं भैरवं क्षेत्र-पालम् ॥२
लं लं लं लम्ब-दन्तं लल-लल-लुलितं दीर्घ-जिह्वा-करालं ।
धूं धूं धूं धूम्र-वर्णं स्फुट-विकृत-मुखं भासुरं भीम-रूपं ।
रुं रुं रुं रुण्ड-मालं रुधिर-मय-मुखं ताम्र-नेत्रं विशालं ।
नं नं नं नग्न-रूपं प्रणमत-सततं भैरवं क्षेत्र-पालम् ॥३
वं वं वं वायु-वेगं प्रलय-परिमितं ब्रह्म-रूप-स्वरूपम् ।
खं खं खं खड्ग-हस्तं त्रिभुवन-निलयं भास्करं भीम-रूपं ।
चं चं चं चालयन्तं चल-चल-चलितं चालितं भूत-चक्रं ।
मं मं मं माया-रूपं प्रणमत-सततं भैरवं क्षेत्र-पालम् ॥४
शं शं शं शङ्ख-हस्तं शशि-कर-धवलं यक्ष-सम्पूर्ण-तेजं ।
मं मं मं माय-मायं कुलमकुल-कुलं मन्त्र-मूर्ति स्व-तत्त्वं ।

भं भं भं भूत-नाथं किल-किलित-वचश्चारु-जिह्वा-लुलंतं ।
अं अं अं अंतरिक्षं प्रणमत-सततं भैरवं क्षेत्र-पालम् ।।५
खं खं खं खड्ग-भेदं विषममृत-मयं काल-कालांधकारं ।
क्षीं क्षीं क्षीं क्षिप्र-वेगं दह दह दहनं गर्वितं भूमि-कम्पं ।
शं श शं शान्त-रूपं सकल-शुभ-करं देव-गन्धर्व-रूपं ।
वं वं वं बाल-लीलां प्रणमत-सततं भैरवं क्षेत्र-पालम् ।।६
सं सं सं सिद्धि-योगं सकल-गुण-मयं देव-देव-प्रसन्नम् ।
पं पं पं पद्म-नाभं हरि-हर-वरदं चन्द्र-सूर्याग्नि-नेत्रं ।
जं जं जं यक्ष-नागं सतत-भय-हरं सर्व-देव-स्वरूपम् ।
रौं रौं रौं रौद्र-रूपं प्रणमत-सततं भैरवं क्षेत्र-पालम् ।।७
हं हं हं हस-घोषं हसित-कहकहा-राव - रुद्राट्टहासम् ।
यं यं यं यक्ष-सुप्तं ,शिर-कनक-महाबद्-खट्वाङ्ग-नाशं ।
रं रं रं रङ्ग-रङ्ग-प्रहसित-वदनं पिङ्गकस्याश्मशानं ।
सं सं सं सिद्धि-नाथं प्रणमत-सततं भैरवं क्षेत्र-पालं ।।८

फल-श्रुति

एवं यो भाव-युक्तं पठति च यतः भैरवास्याष्टकं हि,
निर्विघ्नं दुःख-नाशं असुर-भय-हरं शाकिनीनां विनाशः ।
दस्युर्नं-व्याघ्र-सर्पः, घृति विहसि सदा राजशस्त्रोस्तथाज्ञातं
सर्वे नश्यन्ति दूराद् ग्रह-गण-विषमाश्चेति तांश्चेष्टसिद्धिः

।। विश्वसारोद्धारे क्षेत्रपाल-भैरवाष्टक-स्तोत्रं सम्पूर्णम् ।।

•

परिशिष्ट

'तन्त्रों' में आपदुद्धारक **श्रीबटुक-भैरव-स्तोत्र** के पाठ के कुछ **विशिष्ट क्रम** वर्णित हैं।

यहाँ कुछ **विशिष्ट क्रम** दिए जा रहे हैं। इनमें से किसी एक क्रम के अनुसार पाठ करने पर **श्रीबटुक-भैरव** की कृपा की विशेष रूप से अनुभूति होती है। जिज्ञासु बन्धु आवश्यकतानुसार इनसे लाभ उठा सकते हैं, किन्तु पहले **सामान्य क्रम** के द्वारा **पाठ** कर अनुभूति प्राप्त करना अत्यन्त आवश्यक है।

पाठ के विशिष्ट क्रम

श्रीबटुक-भैरव
अष्टोत्तर-शत-नाम-स्तोत्रम्

(सृष्टि-क्रम-पाठ)

ॐ ह्रीं भैरवो भूत-नाथश्च, भूतात्मा भूत-भावनः।
क्षेत्रज्ञः क्षेत्र - पालश्च, क्षेत्रदः क्षत्रियो विराट्।।१
श्मशान-वासी मांसाशी, खर्पराशी स्मरान्त-कृत्।
रक्तपः पानपः सिद्धः, सिद्धिदः सिद्धि - सेवितः।।२
कङ्कालः काल-शमनः, कला-काष्ठा-तनुः कविः।
त्रि - नेत्रो बहु - नेत्रश्च, तथा पिङ्गल - लोचनः।।३
शूल-पाणिः खड्ग-पाणिः, कङ्काली धूम्र-लोचनः।
अभीरुर्भैरवी - नाथो, भूतपो योगिनी - पतिः।।४
धनदोऽधन - हारी च, धन - वान् प्रतिभाग-वान्।
नाग-हारो नाग-केशो, व्योम-केशः कपाल-भृत्।।५
कालः कपाल-माली च, कमनीयः कला-निधिः।
त्रि-लोचनः ज्वलन्नेत्रस्त्रि-शिखी च त्रि-लोक-भृत्।।६
त्रिवृत्त-तनयो डिम्भः, शान्तः शान्त-जन-प्रियः।
बटुको बटु - वेषश्च, खट्वाङ्ग - वर - धारकः।।७

भूताध्यक्षः पशु - पतिर्भिक्षुकः परिचारकः।
धूर्तो दिगम्बरः शौरिर्हरिणः पाण्डु - लोचनः।।०८
प्रशान्तः शान्तिदः शुद्धः, शङ्कर - प्रिय - बान्धवः।
अष्ट - मूर्तिर्निधीशश्च, ज्ञान - चक्षुस्तपो - मयः।।०९
अष्टाधारः षडाधारः, सर्प - युक्तः शिखी-सखः।
भूधरो भूधराधीशो, भूपतिर्भू - धरात्मजः।।१०
कपाल-धारी मुण्डी च, नाग-यज्ञोपवीत-वान्।
जृम्भणो मोहनः स्तम्भी, मारणः क्षोभणस्तथा।।११
शुद्ध - नीलाञ्जन - प्रख्य - देहः मुण्ड - विभूषणः।
बलि-भुग्बलि-भुङ्-नाथो, बालो बाल-पराक्रमः।।१२
सर्वापत् - तारणो दुर्गो, दुष्ट - भूत - निषेवितः।
कामी कला-निधिः कान्तः, कामिनी-वश-कृद्-वशी।।१३
जगद्-रक्षा-करोऽनन्तो, माया-मन्त्रौषधी-मयः।
सर्व-सिद्धि-प्रदो वैद्यः, प्रभ-विष्णुरितीव हि ह्रीं ॐ।।१४

श्रीबटुक-भैरव
अष्टोत्तर-शत-नाम-स्तोत्रम्

(स्थिति-क्रम-पाठ)

ॐ ह्रीं धनदोऽधन-हारी च, धन-वान् प्रतिभाग-वान्।
नाग-हारो नाग-केशो, व्योम-केशः कपाल-भृत्।।१
कालः कपाल-माली च, कमनीयः कला-निधिः।
त्रि-लोचनः ज्वलन्नेत्रस्त्रि-शिखी च त्रि-लोक-भृत्।।२
त्रिवृत्त-तनयो डिम्भः, शान्तः शान्त-जन-प्रियः।
बटुको बटु - वेषश्च, खट्वाङ्ग - वर-धारकः।।३
भूताध्यक्षः पशु - पतिर्भिक्षुकः परिचारकः।
धूर्तो दिगम्बरः शौरिर्हरिणः पाण्डु - लोचनः।।४
प्रशान्तः शान्तिदः शुद्धः, शङ्कर - प्रिय - बान्धवः।
अष्ट - मूर्तिर्निधीशश्च, ज्ञान - चक्षुस्तपो - मयः।।५
अष्टाधारः षडाधारः, सर्प - युक्तः शिखी - सखः।
भूधरो भूधराधीशो, भूपतिर्भू - धरात्मजः।।६

भैरवो भूत - नाथश्च, भूतात्मा भूत - भावनः।
क्षेत्रज्ञः क्षेत्र - पालश्च, क्षेत्रदः क्षत्रियो विराट्।।०७
श्मशान-वासी मांसाशी, खर्पराशी स्मरान्त-कृत्।
रक्तपः पानपः सिद्धः, सिद्धिदः सिद्धि-सेवितः।।०८
कङ्कालः काल-शमनः, कला-काष्ठा-तनुः कविः।
त्रि - नेत्रो बहु-नेत्रश्च, तथा पिङ्गल-लोचनः।।०९
शूल-पाणिः खड्ग-पाणिः, कङ्काली धूम्र-लोचनः।
अभीरुर्भैरवी - नाथो, भूतपो योगिनी - पतिः।।१०
कपाल-धारी मुण्डी च, नाग-यज्ञोपवीत-वान्।
जृम्भणो मोहनः स्तम्भी, मारणः क्षोभणस्तथा।।११
शुद्ध - नीलाञ्जन - प्रख्य - देहः मुण्ड - विभूषणः।
बलि-भुग् बलि-भुङ्-नाथो, बालो बाल-पराक्रमः।।१२
सर्वापत् - तारणो दुर्गो, दुष्ट - भूत - निषेवितः।
कामी कला-निधिः कान्तः, कामिनी-वश-कृद्-वशी ।।१३
जगद्-रक्षा-करोऽनन्तो, माया-मन्त्रौषधी-मयः।
सर्व-सिद्धि-प्रदो वैद्यः, प्रभ-विष्णुरितीव हि ह्रीं ॐ।।१४

❀❀❀

श्रीबटुक-भैरव अष्टोत्तर-शत-नाम-स्तोत्रम्

(संहार-क्रम-पाठ)

ॐ ह्रीं सर्व-सिद्धि-प्रदो वैद्यः, प्रभ-विष्णुरितीव हि।
जगद्-रक्षा-करोऽनन्तो, माया-मन्त्रौषधी-मयः।।१
कामी कला-निधिः कान्तः, कामिनी-वश-कृद्-वशी।
सर्वापत् - तारणो दुर्गो, दुष्ट - भूत - निषेवितः।।२
बलि-भुग् बलि-भुङ्-नाथो, बालो बाल-पराक्रमः।
शुद्ध - नीलाञ्जन - प्रख्य-देहः मुण्ड-विभूषणः।।३
जृम्भणो मोहनः स्तम्भी, मारणः क्षोभणस्तथा।
कपाल - धारी मुण्डी च, नाग - यज्ञोपवीत-वान्।।४
भूधरो भूधराधीशो, भूपतिर्भू - धरात्मजः।
अष्टाधारः षडाधारः, सर्प - युक्तः शिखी-सखः।।५
अष्ट - मूर्तिर्निधीशश्च, ज्ञान - चक्षुस्तपो-मयः।
प्रशान्तः शान्तिदः शुद्धः, शङ्कर-प्रिय-बान्धवः।।६

धूर्तो दिगम्बरः शौरिर्हरिणः पाण्डु - लोचनः।
भूताध्यक्षः पशु - पतिर्भिक्षुकः परिचारकः।।०७
बटुको बटु - वेषश्च, खट्वाङ्ग - वर - धारकः।
त्रिवृत्त-तनयो डिम्भः, शान्तः शान्त-जन-प्रियः।।०८
त्रि-लोचनः ज्वलन्नेत्रस्त्रि-शिखी च त्रि-लोक-भृत्।
कालः कपाल-माली च, कमनीयः कला-निधिः।।०९
नाग-हारो नाग-केशो, व्योम-केशः कपाल-भृत्।
धनदोऽधन-हारी च, धन-वान् प्रतिभाग-वान्।।१०
अभीरुर्भैरवी - नाथो, भूतपो योगिनी - पतिः।
शूल-पाणिः खड्ग-पाणिः, कङ्काली धूम्र-लोचनः।।११
त्रि - नेत्रो बहु - नेत्रश्च, तथा पिङ्गल - लोचनः।
कङ्कालः काल-शमनः, कला-काष्ठा-तनुः कविः।।१२
रक्तपः पानपः सिद्धः, सिद्धिदः सिद्धि-सेवितः।
श्मशान-वासी मांसाशी, खर्पराशी स्मरान्त-कृत्।।१३
क्षेत्रज्ञः क्षेत्र - पालश्च, क्षेत्रदः क्षत्रियो विराट्।
भैरवो भूत-नाथश्च, भूतात्मा भूत-भावनः ह्रीं ॐ।।१४

❀❀❀

श्रीबटुक-भैरव
अष्टोत्तर-शत-नाम-स्तोत्रम्
सृष्टि-स्थिति-संहार-रूप-त्रिक-पाठ

(सृष्टि-क्रम-पाठ)

(१)

ॐ ह्रीं भैरवो भूत - नाथश्च, भूतात्मा भूत - भावनः।
क्षेत्रज्ञः क्षेत्र - पालश्च, क्षेत्रदः क्षत्रियो विराट्।।१
श्मशान-वासी मांसाशी, खर्पराशी स्मरान्त-कृत्।
रक्तपः पानपः सिद्धः, सिद्धिदः सिद्धि-सेवितः।।२
कङ्कालः काल-शमनः, कला-काष्ठा-तनुः कविः।
त्रि - नेत्रो बहु - नेत्रश्च, तथा पिङ्गल - लोचनः।।३
शूल-पाणिः खड्ग-पाणिः, कङ्काली धूम्र-लोचनः।
अभीरुर्भैरवी - नाथो, भूतपो योगिनी - पतिः।।४
धनदोऽधन - हारी च, धन-वान् प्रतिभाग - वान्।
नाग-हारो नाग-केशो, व्योम-केशः कपाल-भृत्।।५
कालः कपाल-माली च, कमनीयः कला-निधिः।
त्रि-लोचनः ज्वलन्नेत्रस्त्रि-शिखी च त्रि-लोक-भृत्।।६

त्रिवृत्त-तनयो डिम्भः, शान्तः शान्त-जन-प्रियः।
बटुको बटु - वेषश्च, खट्वाङ्ग - वर - धारकः।।०७
भूताध्यक्षः पशु - पतिर्भिक्षुकः परिचारकः।
धूर्तो दिगम्बरः शौरिर्हरिणः पाण्डु - लोचनः।।०८
प्रशान्तः शान्तिदः शुद्धः, शङ्कर - प्रिय - बान्धवः।
अष्ट - मूर्तिर्निधीशश्च, ज्ञान - चक्षुस्तपो - मयः।।०९
अष्टाधारः षडाधारः, सर्प - युक्तः शिखी - सखः।
भूधरो भूधराधीशो, भूपतिर्भू - धरात्मजः।।१०
कपाल-धारी मुण्डी च, नाग-यज्ञोपवीत-वान्।
जृम्भणो मोहनः स्तम्भी, मारणः क्षोभणस्तथा।।११
शुद्ध-नीलाञ्जन-प्रख्य-देहः मुण्ड-विभूषणः।
बलि-भुग् बलि-भुङ्-नाथो, बालो बाल-पराक्रमः।।१२
सर्वापत् - तारणो दुर्गो, दुष्ट-भूत-निषेवितः।
कामी कला-निधिः कान्तः, कामिनी-वश-कृद्-वशी।।१३
जगद्-रक्षा-करोऽनन्तो, माया-मन्त्रौषधी-मयः।
सर्व-सिद्धि-प्रदो वैद्यः, प्रभ-विष्णुरितीव हि ह्रीं ॐ।।१४

(२)

ॐ ह्रीं सर्व-सिद्धि-प्रदो वैद्यः, प्रभ-विष्णुरितीव हि।
जगद्-रक्षा-करोऽनन्तो, माया-मन्त्रौषधी-मयः।।०१
कामी कला-निधिः कान्तः, कामिनी-वश-कृद्-वशी।
सर्वापत् - तारणो दुर्गो, दुष्ट - भूत - निषेवितः।।०२

बलि-भुग् बलि-भुङ्-नाथो, बालो बाल-पराक्रमः।
शुद्ध - नीलाञ्जन-प्रख्य-देहः मुण्ड - विभूषणः।।०३
जृम्भणो मोहनः स्तम्भी, मारणः क्षोभणस्तथा।
कपाल - धारी मुण्डी च, नाग - यज्ञोपवीत - वान्।।०४
भूधरो भूधराधीशो, भूपतिर्भू - धरात्मजः।
अष्टाधारः षडाधारः, सर्प - युक्तः शिखी-सखः।।०५
अष्ट - मूर्तिर्निधीशश्च, ज्ञान - चक्षुस्तपो - मयः।
प्रशान्तः शान्तिदः शुद्धः, शङ्कर - प्रिय - बान्धवः।।०६
धूर्तो दिगम्बरः शौरिर्हरिणः पाण्डु - लोचनः।
भूताध्यक्षः पशु - पतिर्भिक्षुकः परिचारकः।।०७
बटुको बटु - वेषश्च, खट्वाङ्ग - वर - धारकः।
त्रिवृत्त - तनयो डिम्भः, शान्तः शान्त - जन - प्रियः।।०८
त्रि-लोचनः ज्वलन्नेत्रस्त्रि - शिखी च त्रि-लोक-भृत्।
कालः कपाल-माली च, कमनीयः कला-निधिः।।०९
नाग-हारो नाग-केशो, व्योम-केशः कपाल-भृत्।
धनदोऽधन-हारी च, धन - वान् प्रतिभाग-वान्।।१०
अभीरुर्भैरवी - नाथो, भूतपो योगिनी - पतिः।
शूल-पाणिः खड्ग-पाणिः, कङ्काली धूम्र-लोचनः।।११

त्रि - नेत्रो बहु-नेत्रश्च, तथा पिङ्गल - लोचनः।
कङ्कालः काल-शमनः, कला-काष्ठा-तनुः कविः।।१२
रक्तपः पानपः सिद्धः, सिद्धिदः सिद्धि - सेवितः।
श्मशान-वासी मांसाशी, खर्पराशी स्मरान्त-कृत्।।१३
क्षेत्रज्ञः क्षेत्र - पालश्च, क्षेत्रदः क्षत्रियो विराट्।
भैरवो भूत-नाथश्च, भूतात्मा भूत-भावनः ह्रीं ॐ।।१४

(३)

ॐ ह्रीं भैरवो भूत - नाथश्च, भूतात्मा भूत-भावनः।
क्षेत्रज्ञः क्षेत्र - पालश्च, क्षेत्रदः क्षत्रियो विराट्।।०१
श्मशान-वासी मांसाशी, खर्पराशी स्मरान्त-कृत्।
रक्तपः पानपः सिद्धः, सिद्धिदः सिद्धि-सेवितः।।०२
कङ्कालः काल-शमनः, कला-काष्ठा-तनुः कविः।
त्रि - नेत्रो बहु - नेत्रश्च, तथा पिङ्गल - लोचनः।।०३
शूल-पाणिः खड्ग-पाणिः, कङ्काली धूम्र-लोचनः।
अभीरुर्भैरवी - नाथो, भूतपो योगिनी - पतिः।।०४
धनदोऽधन - हारी च, धन - वान् प्रतिभाग - वान्।
नाग-हारो नाग-केशो, व्योम-केशः कपाल-भृत्।।०५
कालः कपाल-माली च, कमनीयः कला-निधिः।
त्रि-लोचनः ज्वलन्नेत्रस्त्रि-शिखी च त्रि-लोक-भृत्।।०६

त्रिवृत्त-तनयो डिम्भः, शान्तः शान्त-जन-प्रियः।
बटुको बटु - वेषश्च, खट्वाङ्ग - वर - धारकः।।०७
भूताध्यक्षः पशु-पतिर्भिक्षुकः परिचारकः।
धूर्तो दिगम्बरः शौरिर्हरिणः पाण्डु - लोचनः।।०८
प्रशान्तः शान्तिदः शुद्धः, शङ्कर-प्रिय-बान्धवः।
अष्ट-मूर्तिर्निधीशश्च, ज्ञान - चक्षुस्तपो - मयः।।०९
अष्टाधारः षडाधारः, सर्प - युक्तः शिखी-सखः।
भूधरो भूधराधीशो, भूपतिर्भू - धरात्मजः।।१०
कपाल-धारी मुण्डी च, नाग-यज्ञोपवीत-वान्।
जृम्भणो मोहनः स्तम्भी, मारणः क्षोभणस्तथा।।११
शुद्ध-नीलाञ्जन-प्रख्य-देहः मुण्ड-विभूषणः।
बलि-भुग् बलि-भुङ्-नाथो, बालो बाल-पराक्रमः।।१२
सर्वापत्- तारणो दुर्गो, दुष्ट-भूत-निषेवितः।
कामी कला-निधिः कान्तः, कामिनी-वश-कृद्-वशी।।१३
जगद्-रक्षा-करोऽनन्तो, माया-मन्त्रौषधी-मयः।
सर्व-सिद्धि-प्रदो वैद्यः, प्रभ-विष्णुरितीव हि ह्रीं ॐ।।१४

❀❀❀

श्रीबटुक-भैरव
अष्टोत्तर-शत-नाम-स्तोत्रम्
सृष्टि-स्थिति-संहार-रूप-त्रिक-पाठ

(स्थिति-क्रम-पाठ)

(१)

ॐ ह्रीं धनदोऽधन-हारी च, धन-वान् प्रतिभाग-वान्।
नाग-हारो नाग-केशो, व्योम-केशः कपाल-भृत्।।१
कालः कपाल-माली च, कमनीयः कला-निधिः।
त्रि-लोचनः ज्वलन्नेत्रस्त्रि-शिखी च त्रि-लोक-भृत्।।२
त्रिवृत्त-तनयो डिम्भः, शान्तः शान्त-जन-प्रियः।
बटुको बटु - वेषश्च, खट्वाङ्ग - वर - धारकः।।३
भूताध्यक्षः पशु - पतिर्भिक्षुकः परिचारकः।
धूर्तो दिगम्बरः शौरिर्हरिणः पाण्डु - लोचनः।।४
प्रशान्तः शान्तिदः शुद्धः, शङ्कर-प्रिय-बान्धवः।
अष्ट - मूर्तिर्निधीशश्च, ज्ञान - चक्षुस्तपो - मयः।।५

अष्टाधार: षडाधार:, सर्प - युक्तः शिखी-सखः।
भूधरो भूधराधीशो, भूपतिर्भू - धरात्मजः।।०६
भैरवो भूत - नाथश्च, भूतात्मा भूत - भावनः।
क्षेत्रज्ञः क्षेत्र - पालश्च, क्षेत्रदः क्षत्रियो विराट्।।०७
श्मशान-वासी मांसाशी, खर्पराशी स्मरान्त-कृत्।
रक्तपः पानपः सिद्धः, सिद्धिदः सिद्धि-सेवितः।।०८
कङ्कालः काल-शमनः, कला-काष्ठा-तनुः कविः।
त्रि-नेत्रो बहु-नेत्रश्च, तथा पिङ्गल-लोचनः।।०९
शूल-पाणिः खड्ग-पाणिः, कङ्काली धूम्र-लोचनः।
अभीरुर्भैरवी - नाथो, भूतपो योगिनी - पतिः।।१०
कपाल-धारी मुण्डी च, नाग-यज्ञोपवीत-वान्।
जृम्भणो मोहनः स्तम्भी, मारणः क्षोभणस्तथा।।११
शुद्ध - नीलाञ्जन-प्रख्य-देहः मुण्ड-विभूषणः।
बलि-भुग्बलि-भुङ्-नाथो, बालो बाल-पराक्रमः।।१२
सर्वापत् - तारणो दुर्गो, दुष्ट - भूत - निषेवितः।
कामी कला-निधिः कान्तः, कामिनी-वश-कृद्-वशी ।।१३
जगद् - रक्षा - करोऽनन्तो, माया-मन्त्रौषधी-मयः।
सर्व-सिद्धि-प्रदो वैद्यः, प्रभ-विष्णुरितीव हि ह्रीं ॐ।।१४

(२)

ॐ ह्रीं सर्व-सिद्धि-प्रदो वैद्यः, प्रभ-विष्णुरितीव हि।
जगद्-रक्षा-करोऽनन्तो, माया-मन्त्रौषधी-मयः।।१
कामी कला-निधिः कान्तः, कामिनी-वश-कृद्-वशी।
सर्वापत् - तारणो दुर्गो, दुष्ट-भूत - निषेवितः।।२
बलि-भुग् बलि-भुङ्-नाथो, बालो बाल-पराक्रमः।
शुद्ध - नीलाञ्जन - प्रख्य - देहः मुण्ड-विभूषणः।।३
जृम्भणो मोहनः स्तम्भी, मारणः क्षोभणस्तथा।
कपाल-धारी मुण्डी च, नाग-यज्ञोपवीत-वान्।।४
अभीरुर्भैरवी - नाथो, भूतपो योगिनी - पतिः।
शूल-पाणिः खड्ग-पाणिः, कङ्काली धूम्र-लोचनः।।५
त्रि-नेत्रो बहु-नेत्रश्च, तथा पिङ्गल-लोचनः।
कङ्कालः काल-शमनः, कला-काष्ठा-तनुः कविः।।६
रक्तपः पानपः सिद्धः, सिद्धिदः सिद्धि-सेवितः।
श्मशान-वासी मांसाशी, खर्पराशी स्मरान्त-कृत्।।७
क्षेत्रज्ञः क्षेत्र - पालश्च, क्षेत्रदः क्षत्रियो विराट्।
भैरवो भूत - नाथश्च, भूतात्मा भूत - भावनः।।८

भूधरो भूधराधीशो, भूपतिर्भू - धरात्मजः।
अष्टाधारः षडाधारः, सर्प - युक्तः शिखी - सखः।।०९
अष्ट - मूर्तिर्निधीशश्च, ज्ञान - चक्षुस्तपो - मयः।
प्रशान्तः शान्तिदः शुद्धः, शङ्कर-प्रिय-बान्धवः।।१०
धूर्तो दिगम्बरः शौरिर्हरिणः पाण्डु - लोचनः।
भूताध्यक्षः पशु - पतिर्भिक्षुकः परिचारकः।।११
बटुको बटु - वेषश्च, खट्वाङ्ग - वर - धारकः।
त्रिवृत्त-तनयो डिम्भः, शान्तः शान्त-जन-प्रियः।।१२
त्रि-लोचनः ज्वलन्नेत्रस्त्रि-शिखी च त्रि-लोक-भृत्।
कालः कपाल-माली च, कमनीयः कला-निधिः।।१३
नाग-हारो नाग-केशो, व्योम-केशः कपाल-भृत्।
धनदोऽधन-हारी च, धन-वान् प्रतिभाग-वान् ह्रीं ॐ।।१४

(३)

ॐ ह्रीं धनदोऽधन-हारी च, धन-वान् प्रतिभाग-वान्।
नाग-हारो नाग-केशो, व्योम-केशः कपाल-भृत्।।०१
कालः कपाल-माली च, कमनीयः कला-निधिः।
त्रि-लोचनः ज्वलन्नेत्रस्त्रि-शिखी च त्रि-लोक-भृत्।।०२

त्रिवृत्त-तनयो डिम्भः, शान्तः शान्त-जन-प्रियः।
बटुको बटु - वेषश्च, खट्वाङ्ग - वर - धारकः।।०३
भूताध्यक्षः पशु - पतिर्भिक्षुकः परिचारकः।
धूर्तो दिगम्बरः शौरिर्हरिणः पाण्डु - लोचनः।।०४
प्रशान्तः शान्तिदः शुद्धः, शङ्कर-प्रिय-बान्धवः।
अष्ट - मूर्तिर्निधीशश्च, ज्ञान - चक्षुस्तपो - मयः।।०५
अष्टाधारः षडाधारः, सर्प - युक्तः शिखी-सखः।
भूधरो भूधराधीशो, भूपतिर्भू - धरात्मजः।।०६
भैरवो भूत - नाथश्च, भूतात्मा भूत - भावनः।
क्षेत्रज्ञः क्षेत्र - पालश्च, क्षेत्रदः क्षत्रियो विराट्।।०७
श्मशान-वासी मांसाशी, खर्पराशी स्मरान्त-कृत्।
रक्तपः पानपः सिद्धः, सिद्धिदः सिद्धि-सेवितः।।०८
कङ्कालः काल-शमनः, कला-काष्ठा-तनुः कविः।
त्रि-नेत्रो बहु-नेत्रश्च, तथा पिङ्गल-लोचनः।।०९
शूल-पाणिः खड्ग-पाणिः, कङ्काली धूम्र-लोचनः।
अभीरुर्भैरवी - नाथो, भूतपो योगिनी - पतिः।।१०
कपाल-धारी मुण्डी च, नाग-यज्ञोपवीत-वान्।
जृम्भणो मोहनः स्तम्भी, मारणः क्षोभणस्तथा।।११

शुद्ध-नीलाञ्जन-प्रख्य-देहः मुण्ड - विभूषणः।
बलि-भुग् बलि-भुङ्-नाथो, बालो बाल-पराक्रमः।।१२
सर्वापत् - तारणो दुर्गो, दुष्ट-भूत-निषेवितः।
कामी कला-निधिः कान्तः, कामिनी-वश-कृद्-वशी ।।१३
जगद्-रक्षा-करोऽनन्तो, माया-मन्त्रौषधी-मयः।
सर्व-सिद्धि-प्रदो वैद्यः, प्रभ-विष्णुरितीव हि ह्रीं ॐ।।१४

श्रीबटुक-भैरव
अष्टोत्तर-शत-नाम-स्तोत्रम्
सृष्टि-स्थिति-संहार-रूप-त्रिक-पाठ

(संहार-क्रम-पाठ)

(१)

ॐ ह्रीं सर्व-सिद्धि-प्रदो वैद्यः, प्रभ-विष्णुरितीव हि।
जगद्-रक्षा-करोऽनन्तो, माया-मन्त्रौषधी-मयः।।१
कामी कला-निधिः कान्तः, कामिनी-वश-कृद्-वशी।
सर्वापत् - तारणो दुर्गो, दुष्ट - भूत - निषेवितः।।२
बलि-भुग् बलि-भुङ्-नाथो, बालो बाल-पराक्रमः।
शुद्ध - नीलाञ्जन - प्रख्य - देहः मुण्ड - विभूषणः।।३
जृम्भणो मोहनः स्तम्भी, मारणः क्षोभणस्तथा।
कपाल-धारी मुण्डी च, नाग-यज्ञोपवीत-वान्।।४
भूधरो भूधराधीशो, भूपतिर्भू - धरात्मजः।
अष्टाधारः षडाधारः, सर्प - युक्तः शिखी-सखः।।५

अष्ट - मूर्तिर्निधीशश्च, ज्ञान - चक्षुस्तपो - मयः।
प्रशान्तः शान्तिदः शुद्धः, शङ्कर-प्रिय-बान्धवः।।०६
धूर्तो दिगम्बरः शौरिर्हरिणः पाण्डु - लोचनः।
भूताध्यक्षः पशु - पतिर्भिक्षुकः परिचारकः।।०७
बटुको बटु - वेषश्च, खट्वाङ्ग - वर - धारकः।
त्रिवृत्त-तनयो डिम्भः, शान्तः शान्त-जन-प्रियः।।०८
त्रि-लोचनः ज्वलन्नेत्रस्त्रि-शिखी च त्रि-लोक-भृत्।
कालः कपाल - माली च, कमनीयः कला-निधिः।।०९
नाग-हारो नाग-केशो, व्योम-केशः कपाल-भृत्।
धनदोऽधन-हारी च, धन-वान् प्रतिभाग-वान्।।१०
अभीरुर्भैरवी-नाथो, भूतपो योगिनी - पतिः।
शूल-पाणिः खड्ग-पाणिः, कङ्काली धूम्र-लोचनः।।११
त्रि-नेत्रो बहु-नेत्रश्च, तथा पिङ्गल - लोचनः।
कङ्कालः काल-शमनः, कला-काष्ठा-तनुः कविः।।१२
रक्तपः पानपः सिद्धः, सिद्धिदः सिद्धि-सेवितः।
श्मशान-वासी मांसाशी, खर्पराशी स्मरान्त-कृत्।।१३
क्षेत्रज्ञः क्षेत्र - पालश्च, क्षेत्रदः क्षत्रियो विराट्।
भैरवो भूत-नाथश्च, भूतात्मा भूत-भावनः ह्रीं ॐ।।१४

(२)

ॐ ह्री भैरवो भूत - नाथश्च, भूतात्मा भूत - भावनः।
क्षेत्रज्ञः क्षेत्र - पालश्च, क्षेत्रदः क्षत्रियो विराट्।।०१

श्मशान-वासी मांसाशी, खर्पराशी स्मरान्त-कृत्।
रक्तपः पानपः सिद्धः, सिद्धिदः सिद्धि-सेवितः।।०२
कङ्कालः काल-शमनः, कला-काष्ठा-तनुः कविः।
त्रि-नेत्रो बहु-नेत्रश्च, तथा पिङ्गल-लोचनः।।०३
शूल-पाणिः खड्ग-पाणिः, कङ्काली धूम्र-लोचनः।
अभीरुर्भैरवी - नाथो, भूतपो योगिनी - पतिः।।०४
धनदोऽधन-हारी च, धन-वान् प्रतिभाग-वान्।
नाग-हारो नाग-केशो, व्योम-केशः कपाल-भृत्।।०५
कालः कपाल-माली च, कमनीयः कला-निधिः।
त्रिलोचनः ज्वलन्नेत्रस्त्रि-शिखी च त्रि-लोक-भृत्।।०६
त्रिवृत्त-तनयो डिम्भः, शान्तः शान्त-जन-प्रियः।
बटुको बटु - वेषश्च, खट्वाङ्ग - वर - धारकः।।०७
भूताध्यक्षः पशु - पतिर्भिक्षुकः परिचारकः।
धूर्तो दिगम्बरः शौरिर्हरिणः पाण्डु - लोचनः।।०८
प्रशान्तः शान्तिदः शुद्धः, शङ्कर-प्रिय-बान्धवः।
अष्ट - मूर्तिर्निधीशश्च, ज्ञान - चक्षुस्तपो-मयः।।०९
अष्टाधारः षडाधारः, सर्प - युक्तः शिखी-सखः।
भूधरो भूधराधीशो, भूपतिर्भू - धरात्मजः।।१०
कपाल-धारी मुण्डी च, नाग-यज्ञोपवीत-वान्।
जृम्भणो मोहनः स्तम्भी, मारणः क्षोभणस्तथा।।११

शुद्ध - नीलाञ्जन - प्रख्य - देहः मुण्ड-विभूषणः।
बलि-भुग् बलि-भुङ्-नाथो, बालो बाल-पराक्रमः।।१२
सर्वापत् - तारणो दुर्गो, दुष्ट - भूत - निषेवितः।
कामी कला-निधिः कान्तः, कामिनी-वश-कृद्-वशी।।१३
जगद्-रक्षा-करोऽनन्तो, माया-मन्त्रौषधी-मयः।
सर्व-सिद्धि-प्रदो वैद्यः, प्रभ-विष्णुरितीव हि ह्रीं ॐ।।१४

(३)

ॐ ह्रीं सर्व-सिद्धि-प्रदो वैद्यः, प्रभ-विष्णुरितीव हि।
जगद् - रक्षा-करोऽनन्तो, माया-मन्त्रौषधी-मयः।।०१
कामी कला-निधिः कान्तः, कामिनी-वश-कृद्-वशी।
सर्वापत् - तारणो दुर्गो, दुष्ट - भूत - निषेवितः।।०२
बलि-भुग् बलि-भुङ्-नाथो, बालो बाल-पराक्रमः।
शुद्ध - नीलाञ्जन - प्रख्य - देहः मुण्ड - विभूषणः।।०३
जृम्भणो मोहनः स्तम्भी, मारणः क्षोभणस्तथा।
कपाल - धारी मुण्डी च, नाग - यज्ञोपवीत - वान्।।०४
भूधरो भूधराधीशो, भूपतिर्भू - धरात्मजः।
अष्टाधारः षडाधारः, सर्प - युक्तः शिखी - सखः।।०५
अष्ट - मूर्तिर्निधीशश्च, ज्ञान - चक्षुस्तपो - मयः।
प्रशान्तः शान्तिदः शुद्धः, शङ्कर-प्रिय-बान्धवः।।०६

धूर्तो दिगम्बरः शौरिर्हरिणः पाण्डु - लोचनः।
भूताध्यक्षः पशु - पतिर्भिक्षुकः परिचारकः।।०७
बटुको बटु - वेषश्च, खट्वाङ्ग - वर - धारकः।
त्रिवृत्त - तनयो डिम्भः, शान्तः शान्त - जन - प्रियः।।०८
त्रि-लोचनः ज्वलन्नेत्रस्त्रि-शिखी च त्रि-लोक-भृत्।
कालः कपाल-माली च, कमनीयः कला-निधिः।।०९
नाग-हारो नाग-केशो, व्योम-केशः कपाल-भृत्।
धनदोऽधन-हारी च, धन-वान् प्रतिभाग-वान्।।१०
अभीरुर्भैरवी-नाथो, भूतपो योगिनी-पतिः।
शूल-पाणिः खड्ग-पाणिः, कङ्काली धूम्र-लोचनः।।११
त्रि-नेत्रो बहु-नेत्रश्च, तथा पिङ्गल-लोचनः।
कङ्कालः काल-शमनः, कला-काष्ठा-तनुः कविः।।१२
रक्तपः पानपः सिद्धः, सिद्धिदः सिद्धि-सेवितः।
श्मशान-वासी मांसाशी, खर्पराशी स्मरान्त-कृत्।।१३
क्षेत्रज्ञः क्षेत्र-पालश्च, क्षेत्रदः क्षत्रियो विराट्।
भैरवो भूत-नाथश्च, भूतात्मा भूत-भावनः ह्रीं ॐ।।१४

श्रीबटुक-भैरव
अष्टोत्तर-शत-नामवली

(सृष्टि-क्रम-पाठ)

०१. ॐ ह्रीं भैरवाय नमः
०२. ॐ ह्रीं भूत-नाथाय नमः
०३. ॐ ह्रीं भूतात्मने नमः
०४. ॐ ह्रीं भूत-भावनाय नमः
०५. ॐ ह्रीं क्षेत्रज्ञाय नमः
०६. ॐ ह्रीं क्षेत्र-पालाय नमः
०७. ॐ ह्रीं क्षेत्रदाय नमः
०८. ॐ ह्रीं क्षत्रियाय नमः
०९. ॐ ह्रीं विराजे नमः
१०. ॐ ह्रीं श्मशान-वासिने नमः
११. ॐ ह्रीं मांसाशिने नमः
१२. ॐ ह्रीं खर्पराशिने नमः
१३. ॐ ह्रीं स्मरान्त-कृते नमः
१४. ॐ ह्रीं रक्तपाय नमः
१५. ॐ ह्रीं पानपाय नमः

१६. ॐ ह्रीं सिद्धाय नमः
१७. ॐ ह्रीं सिद्धिदाय नमः
१८. ॐ ह्रीं सिद्धि-सेविताय नमः
१९. ॐ ह्रीं कङ्कालाय नम
२०. ॐ ह्रीं काल-शमनाय नमः
२१. ॐ ह्रीं कला-काष्ठा-तनवे नमः
२२. ॐ ह्रीं कवये नमः
२३. ॐ ह्रीं त्रि-नेत्राय नमः
२४. ॐ ह्रीं बहु-नेत्राय नमः
२५. ॐ ह्रीं पिङ्गल-लोचनाय नमः
२६. ॐ ह्रीं शूल-पाणये नमः
२७. ॐ ह्रीं खड्ग-पाणये नमः
२८. ॐ ह्रीं कङ्कालिने नमः
२९. ॐ ह्रीं धूम्र-लोचनाय नमः
३०. ॐ ह्रीं अभीरवे नमः
३१. ॐ ह्रीं भैरवी-नाथाय नमः
३२. ॐ ह्रीं भूतपाय नमः
३३. ॐ ह्रीं योगिनी-पतये नमः
३४. ॐ ह्रीं धनदाय नमः
३५. ॐ ह्रीं अधन-हारिणे नमः
३६. ॐ ह्रीं धनवते नमः

३७. ॐ ह्रीं प्रतिभागवते नमः
३८. ॐ ह्रीं नाग-हाराय नमः
३९. ॐ ह्रीं नाग-केशाय नमः
४०. ॐ ह्रीं व्योम-केशाय नमः
४१. ॐ ह्रीं कपाल-भृते नमः
४२. ॐ ह्रीं कालाय नमः
४३. ॐ ह्रीं कपाल-मालिने नमः
४४. ॐ ह्रीं कमनीयाय नमः
४५. ॐ ह्रीं कला-निधये नमः
४६. ॐ ह्रीं त्रिलोचननाय नमः
४७. ॐ ह्रीं ज्वलन्नेत्राय नमः
४८. ॐ ह्रीं त्रि-शिखिने नमः
४९. ॐ ह्रीं त्रि-लोक-भृते नमः
५०. ॐ ह्रीं त्रिवृत्त-तनयाय नमः
५१. ॐ ह्रीं डिम्भाय नमः
५२. ॐ ह्रीं शान्ताय नमः
५३. ॐ ह्रीं शान्त-जन-प्रियाय नमः
५४. ॐ ह्रीं बटुकाय नमः
५५. ॐ ह्रीं बटु-वेषाय नमः
५६. ॐ ह्रीं खट्वाङ्ग-वर-धारकाय नमः
५७. ॐ ह्रीं भूताध्यक्ष नमः

५८. ॐ ह्रीं पशु-पतये नमः
५९. ॐ ह्रीं भिक्षुकाय नमः
६०. ॐ ह्रीं परिचारकाय नमः
६१. ॐ ह्रीं धूर्ताय नमः
६२. ॐ ह्रीं दिगम्बराय नमः
६३. ॐ ह्रीं शौरये नमः
६४. ॐ ह्रीं हरिणाय नमः
६५. ॐ ह्रीं पाण्डु-लोचनाय नमः
६६. ॐ ह्रीं प्रशान्ताय नमः
६७. ॐ ह्रीं शान्तिदाय नमः
६८. ॐ ह्रीं शुद्धाय नमः
६९. ॐ ह्रीं शङ्कर-प्रिय-बान्धवाय नमः
७०. ॐ ह्रीं अष्ट-मूर्तये नमः
७१. ॐ ह्रीं निधीशाय नमः
७२. ॐ ह्रीं ज्ञान-चक्षुषे नमः
७३. ॐ ह्रीं तपो-मयाय नमः
७४. ॐ ह्रीं अष्टाधाराय नमः
७५. ॐ ह्रीं षडाधाराय नमः
७६. ॐ ह्रीं सर्प-युक्ताय नमः
७७. ॐ ह्रीं शिखी-सखाय नमः
७८. ॐ ह्रीं भूधराय नमः

७९. ॐ ह्रीं भूधराधीशाय नमः
८०. ॐ ह्रीं भू-पतये नमः
८१. ॐ ह्रीं भू-धरात्मजाय नमः
८२. ॐ ह्रीं कपाल-धारिणे नमः
८३. ॐ ह्रीं मुण्डिने नमः
८४. ॐ ह्रीं नाग-यज्ञोपवीत-वते नमः
८५. ॐ ह्रीं जृम्भणाय नमः
८६. ॐ ह्रीं मोहनाय नमः
८७. ॐ ह्रीं स्तम्भिने नमः
८८. ॐ ह्रीं मारणाय नमः
८९. ॐ ह्रीं क्षोभणाय नमः
९०. ॐ ह्रीं शुद्ध-नीलाञ्जन-प्रख्य-देहाय नमः
९१. ॐ ह्रीं मुण्ड-विभूषणाय नमः
९२. ॐ ह्रीं बलि-भुजे नमः
९३. ॐ ह्रीं बलि-भुङ्-नाथाय नमः
९४. ॐ ह्रीं बालाय नमः
९५. ॐ ह्रीं बाल-पराक्रमाय नमः
९६. ॐ ह्रीं सर्वापत्-तारणाय नमः
९७. ॐ ह्रीं दुर्गाय नमः
९८. ॐ ह्रीं दुष्ट-भूत-निषेविताय नमः

०९९. ॐ ह्रीं कामिने नमः

१००. ॐ ह्रीं कला-निधये नमः

१०१. ॐ ह्रीं कान्ताय नमः

१०२. ॐ ह्रीं कामिनी-वश-कृद्-वशिने नमः

१०३. ॐ ह्रीं जगद्-रक्षा-कराय नमः

१०४. ॐ ह्रीं अनन्ताय नमः

१०५. ॐ ह्रीं माया-मन्त्रौषधी-मयाय नमः

१०६. ॐ ह्रीं सर्व-सिद्धि-प्रदाय नमः

१०७. ॐ ह्रीं वैद्याय नमः

१०८. ॐ ह्रीं प्रभ-विष्णवे नमः

श्रीबटुक-भैरव
अष्टोत्तर-शत-नामावली

(स्थिति-क्रम)

०१. ॐ ह्रीं धनदाय नमः
०२. ॐ ह्रीं अधन-हारिणे नमः
०३. ॐ ह्रीं धनवते नमः
०४. ॐ ह्रीं प्रतिभागवते नमः
०५. ॐ ह्रीं नाग-हाराय नमः
०६. ॐ ह्रीं नाग-केशाय नमः
०७. ॐ ह्रीं व्योम-केशाय नमः
०८. ॐ ह्रीं कपाल-भृते नमः
०९. ॐ ह्रीं कालाय नमः
१०. ॐ ह्रीं कपाल-मालिने नमः
११. ॐ ह्रीं कमनीयाय नमः
१२. ॐ ह्रीं कला-निधये नमः
१३. ॐ ह्रीं त्रिलोचननाय नमः
१४. ॐ ह्रीं ज्वलन्नेत्राय नमः
१५. ॐ ह्रीं त्रि-शिखिने नमः

१६. ॐ ह्रीं त्रि-लोक-भृते नमः
१७. ॐ ह्रीं त्रिवृत्त-तनयाय नमः
१८. ॐ ह्रीं डिम्भाय नमः
१९. ॐ ह्रीं शान्ताय नमः
२०. ॐ ह्रीं शान्त-जन-प्रियाय नमः
२१. ॐ ह्रीं बटुकाय नमः
२२. ॐ ह्रीं बटु-वेषाय नमः
२३. ॐ ह्रीं खट्वाङ्ग-वर-धारकाय नमः
२४. ॐ ह्रीं भूताध्यक्ष नमः
२५. ॐ ह्रीं पशु-पतये नमः
२६. ॐ ह्रीं भिक्षुकाय नमः
२७. ॐ ह्रीं परिचारकाय नमः
२८. ॐ ह्रीं धूर्ताय नमः
२९. ॐ ह्रीं दिगम्बराय नमः
३०. ॐ ह्रीं शौरये नमः
३१. ॐ ह्रीं हरिणाय नमः
३२. ॐ ह्रीं पाण्डु-लोचनाय नमः
३३. ॐ ह्रीं प्रशान्ताय नमः
३४. ॐ ह्रीं शान्तिदाय नमः
३५. ॐ ह्रीं शुद्धाय नमः
३६. ॐ ह्रीं शङ्कर-प्रिय-बान्धवाय नमः

३७. ॐ ह्रीं अष्ट-मूर्तये नमः
३८. ॐ ह्रीं निधीशाय नमः
३९. ॐ ह्रीं ज्ञान-चक्षुषे नमः
४०. ॐ ह्रीं तपो-मयाय नमः
४१. ॐ ह्रीं अष्टाधाराय नमः
४२. ॐ ह्रीं षडाधाराय नमः
४३. ॐ ह्रीं सर्प-युक्ताय नमः
४४. ॐ ह्रीं शिखी-सखाय नमः
४५. ॐ ह्रीं भूधराय नमः
४६. ॐ ह्रीं भूधराधीशाय नमः
४७. ॐ ह्रीं भू-पतये नमः
४८. ॐ ह्रीं भू-धरात्मजाय नमः
४९. ॐ ह्रीं भैरवाय नमः
५०. ॐ ह्रीं भूत-नाथाय नमः
५१. ॐ ह्रीं भूतात्मने नमः
५२. ॐ ह्रीं भूत-भावनाय नमः
५३. ॐ ह्रीं क्षेत्रज्ञाय नमः
५४. ॐ ह्रीं क्षेत्र-पालाय नमः
५५. ॐ ह्रीं क्षेत्रदाय नमः
५६. ॐ ह्रीं क्षत्रियाय नमः
५७. ॐ ह्रीं विराजे नमः

५८. ॐ ह्रीं श्मशान-वासिने नमः
५९. ॐ ह्रीं मांसाशिने नमः
६०. ॐ ह्रीं खर्पराशिने नमः
६१. ॐ ह्रीं स्मरान्त-कृते नमः
६२. ॐ ह्रीं रक्तपाय नमः
६३. ॐ ह्रीं पानपाय नमः
६४. ॐ ह्रीं सिद्धाय नमः
६५. ॐ ह्रीं सिद्धिदाय नमः
६६. ॐ ह्रीं सिद्धि-सेविताय नमः
६७. ॐ ह्रीं कङ्कालाय नमः
६८. ॐ ह्रीं काल-शमनाय नमः
६९. ॐ ह्रीं कला-काष्ठा-तनवे नमः
७०. ॐ ह्रीं कवये नमः
७१. ॐ ह्रीं त्रि-नेत्राय नमः
७२. ॐ ह्रीं बहु-नेत्राय नमः
७३. ॐ ह्रीं पिङ्गल-लोचनाय नमः
७४. ॐ ह्रीं शूल-पाणये नमः
७५. ॐ ह्रीं खड्ग-पाणये नमः
७६. ॐ ह्रीं कङ्कालिने नमः
७७. ॐ ह्रीं धूम्र-लोचनाय नमः
७८. ॐ ह्रीं अभीरवे नमः

७९. ॐ ह्रीं भैरवी-नाथाय नमः
८०. ॐ ह्रीं भूतपाय नमः
८१. ॐ ह्रीं योगिनी-पतये नमः
८२. ॐ ह्रीं कपाल-धारिणे नमः
८३. ॐ ह्रीं मुण्डिने नमः
८४. ॐ ह्रीं नाग-यज्ञोपवीत-वते नमः
८५. ॐ ह्रीं जृम्भणाय नमः
८६. ॐ ह्रीं मोहनाय नमः
८७. ॐ ह्रीं स्तम्भिने नमः
८८. ॐ ह्रीं मारणाय नमः
८९. ॐ ह्रीं क्षोभणाय नमः
९०. ॐ ह्रीं शुद्ध-नीलाञ्जन-प्रख्य-देहाय नमः
९१. ॐ ह्रीं मुण्ड-विभूषणाय नमः
९२. ॐ ह्रीं बलि-भुजे नमः
९३. ॐ ह्रीं बलि-भुङ्-नाथाय नमः
९४. ॐ ह्रीं बालाय नमः
९५. ॐ ह्रीं बाल-पराक्रमाय नमः
९६. ॐ ह्रीं सर्वापत्-तारणाय नमः
९७. ॐ ह्रीं दुर्गाय नमः
९८. ॐ ह्रीं दुष्ट-भूत-निषेविताय नमः
९९. ॐ ह्रीं कामिने नमः

१००. ॐ ह्रीं कला-निधये नमः
१०१. ॐ ह्रीं कान्ताय नमः
१०२. ॐ ह्रीं कामिनी-वश-कृद्-वशिने नमः
१०३. ॐ ह्रीं जगद्-रक्षा-कराय नमः
१०४. ॐ ह्रीं अनन्ताय नमः
१०५. ॐ ह्रीं माया-मन्त्रौषधी-मयाय नमः
१०६. ॐ ह्रीं सर्व-सिद्धि-प्रदाय नमः
१०७. ॐ ह्रीं वैद्याय नमः
१०८. ॐ ह्रीं प्रभ-विष्णवे नमः

श्रीबटुक-भैरव
अष्टोत्तर-शत-नामवली

(संहार-क्रम-पाठ)

०१. ॐ ह्रीं प्रभ-विष्णवे नमः
०२. ॐ ह्रीं वैद्याय नमः
०३. ॐ ह्रीं सर्व-सिद्धि-प्रदाय नमः
०४. ॐ ह्रीं माया-मन्त्रौषधी-मयाय नमः
०५. ॐ ह्रीं अनन्ताय नमः
०६. ॐ ह्रीं अनन्ताय नमः
०७. ॐ ह्रीं जगद्-रक्षा-कराय नमः
०८. ॐ ह्रीं कामिनी-वश-कृद्-वशिने नमः
०९. ॐ ह्रीं कान्ताय नमः
१०. ॐ ह्रीं कला-निधये नमः
११. ॐ ह्रीं कामिने नमः
१२. ॐ ह्रीं दुष्ट-भूत-निषेविताय नमः
१३. ॐ ह्रीं दुर्गाय नमः
१४. ॐ ह्रीं सर्वापत्-तारणाय नमः
१५. ॐ ह्रीं बाल-पराक्रमाय नमः
१६. ॐ ह्रीं बालाय नमः

१७. ॐ ह्रीं बलि-भुङ्-नाथाय नमः
१८. ॐ ह्रीं बलि-भुजे नमः
१९. ॐ ह्रीं मुण्ड-विभूषणाय नमः
२०. ॐ ह्रीं शुद्ध-नीलाञ्जन-प्रख्य-देहाय नमः
२१. ॐ ह्रीं क्षोभणाय नमः
२२. ॐ ह्रीं मारणाय नमः
२३. ॐ ह्रीं स्तम्भिने नमः
२४. ॐ ह्रीं मोहनाय नमः
२५. ॐ ह्रीं जृम्भणाय नमः
२६. ॐ ह्रीं नाग-यज्ञोपवीत-वते नमः
२७. ॐ ह्रीं मुण्डिने नमः
२८. ॐ ह्रीं कपाल-धारिणे नमः
२९. ॐ ह्रीं भू-धरात्मजाय नमः
३०. ॐ ह्रीं भू-पतये नमः
३१. ॐ ह्रीं भूधराधीशाय नमः
३२. ॐ ह्रीं भूधराय नमः
३३. ॐ ह्रीं सर्प-युक्ताय नमः
३४. ॐ ह्रीं षडाधाराय नमः
३५. ॐ ह्रीं अष्टाधाराय नमः
३६. ॐ ह्रीं तपो-मयाय नमः
३७. ॐ ह्रीं ज्ञान-चक्षुषे नमः
३८. ॐ ह्रीं निधीशाय नमः

३९. ॐ ह्रीं अष्ट-मूर्तये नमः
४०. ॐ ह्रीं शङ्कर-प्रिय-बान्धवाय नमः
४१. ॐ ह्रीं शुद्धाय नमः
४२. ॐ ह्रीं शान्तिदाय नमः
४३. ॐ ह्रीं प्रशान्ताय नमः
४४. ॐ ह्रीं पाण्डु-लोचनाय नमः
४५. ॐ ह्रीं हरिणाय नमः
४६. ॐ ह्रीं शौरये नमः
४७. ॐ ह्रीं दिगम्बराय नमः
४८. ॐ ह्रीं धूर्ताय नमः
४९. ॐ ह्रीं परिचारकाय नमः
५०. ॐ ह्रीं भिक्षुकाय नमः
५१. ॐ ह्रीं पशु-पतये नमः
५२. ॐ ह्रीं भूताध्यक्ष नमः
५३. ॐ ह्रीं खट्वाङ्ग-वर-धारकाय नमः
५४. ॐ ह्रीं बटु-वेषाय नमः
५५. ॐ ह्रीं बटुकाय नमः
५६. ॐ ह्रीं शान्त-जन-प्रियाय नमः
५७. ॐ ह्रीं शान्ताय नमः
५८. ॐ ह्रीं डिम्भाय नमः
५९. ॐ ह्रीं त्रिवृत्त-तनयाय नमः
६०. ॐ ह्रीं त्रि-लोक-भृते नमः
६१. ॐ ह्रीं त्रि-शिखिने नमः
६२. ॐ ह्रीं ज्वलन्नेत्राय नमः

६३. ॐ ह्रीं त्रिलोचननाय नमः
६४. ॐ ह्रीं कला-निधये नमः
६५. ॐ ह्रीं कमनीयाय नमः
६६. ॐ ह्रीं कपाल-मालिने नमः
६७. ॐ ह्रीं कालाय नमः
६८. ॐ ह्रीं कपाल-भृते नमः
६९. ॐ ह्रीं व्योम-केशाय नमः
७०. ॐ ह्रीं नाग-केशाय नमः
७१. ॐ ह्रीं नाग-हाराय नमः
७२. ॐ ह्रीं प्रतिभागवते नमः
७३. ॐ ह्रीं धनवते नमः
७४. ॐ ह्रीं अधन-हारिणे नमः
७५. ॐ ह्रीं धनदाय नमः
७६. ॐ ह्रीं योगिनी-पतये नमः
७७. ॐ ह्रीं भूतपाय नमः
७८. ॐ ह्रीं भैरवी-नाथाय नमः
७९. ॐ ह्रीं अभीरवे नमः
८०. ॐ ह्रीं धूम्र-लोचनाय नमः
८१. ॐ ह्रीं कङ्कालिने नमः
८२. ॐ ह्रीं खड्ग-पाणये नमः
८३. ॐ ह्रीं शूल-पाणये नमः
८४. ॐ ह्रीं पिङ्गल-लोचनाय नमः
८५. ॐ ह्रीं बहु-नेत्राय नमः
८६. ॐ ह्रीं त्रि-नेत्राय नमः

०८७. ॐ ह्रीं कवये नमः
०८८. ॐ ह्रीं कला-काष्ठा-तनवे नमः
०८९. ॐ ह्रीं काल-शमनाय नमः
०९०. ॐ ह्रीं कङ्कालाय नम
०९१. ॐ ह्रीं सिद्धि-सेविताय नमः
०९२. ॐ ह्रीं सिद्धिदाय नमः
०९३. ॐ ह्रीं सिद्धाय नमः
०९४. ॐ ह्रीं पानपाय नमः
०९५. ॐ ह्रीं रक्तपाय नमः
०९६. ॐ ह्रीं स्मरान्त-कृते नमः
०९७. ॐ ह्रीं खर्पराशिने नमः
०९८. ॐ ह्रीं मांसाशिने नमः
०९९. ॐ ह्रीं श्मशान-वासिने नमः
१००. ॐ ह्रीं विराजे नमः
१०१. ॐ ह्रीं क्षत्रियाय नमः
१०२. ॐ ह्रीं क्षेत्रदाय नमः
१०३. ॐ ह्रीं क्षेत्र-पालाय नमः
१०४. ॐ ह्रीं क्षेत्रज्ञाय नमः
१०५. ॐ ह्रीं भूत-भावनाय नमः
१०६. ॐ ह्रीं भूतात्मने नमः
१०७. ॐ ह्रीं भूत-नाथाय नमः
१०८. ॐ ह्रीं भैरवाय नमः

श्रीबटुक-भैरव का सात्त्विक स्वरूप

भगवान् श्रीबटुक-भैरव का सात्त्विक ध्यान

भगवान् श्रीबटुक-भैरव के सात्त्विक ध्यान के अनुसार श्री भैरव-देव बालक-रूपी हैं। इनकी देह-कान्ति स्फटिक की तरह है। कुण्डलों से इनका चेहरा प्रदीप्त है। इनकी कमर और चरणों पर नव मणियों के अलङ्कार-जैसे किङ्किणी, नूपुर आदि विभूषित हैं। ये निर्मल वस्त्र-धारी, प्रसन्न-चित्त और त्रिनेत्र-युक्त हैं। हाथों में ये शूल और दण्ड धारण किए हुए हैं।

श्रीबटुक-भैरव का राजसिक स्वरूप

भगवान् श्रीबटुक-भैरव का राजसिक ध्यान

भगवान् श्रीबटुक-भैरव के राजस ध्यान के अनुसार श्री भैरव-देव की देह-प्रभा उदय-शील सूर्य की तरह है। ये तीन नेत्र-युक्त हैं। रक्ताङ्ग-राग, रक्त-माला-धारी और हास्य-वदन-युक्त हैं। इनके हाथों में वर-मुद्रा, नर-कपाल, अभय-मुद्रा और शूल हैं। ये साधक के भय को हरनेवाले हैं। इनका ग्रीवा-स्थल नील-वर्ण का है। ये विभिन्न अलङ्कारों से अलंकृत हैं। इनकी चूड़ा पर चन्द्र है। इनके पहिनावे पर बन्धूक पुष्प की भाँति अरुण वसन है।

श्रीबटुक-भैरव का तामसिक स्वरूप

भगवान् श्रीबटुक-भैरव का तामसिक ध्यान

भगवान् श्रीबटुक-भैरव के तामस ध्यान के अनुसार श्रीभैरव देव की देह-कान्ति नील-पर्वत की तरह है। ये शशि-कला और मुण्ड-माला-धारी हैं। ये दिगम्बर पिङ्गल नेत्र के हैं। इनके हाथों में डमरु, अंकुश, खड्ग, शूल, अभय-मुद्रा, सर्प, घण्टा और नर-कपाल हैं। इनकी दन्त-पंक्तियाँ भयावह हैं। ये त्रि-नेत्र-युक्त हैं। ये मणि-युक्त किङ्किणी-नूपुर आदि अलङ्कारों से अलंकृत हैं।